UPHIN-11403

RNI - 43357/85
डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026

शिशु मंदिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष -41 | अंक -01 | युगाब्द - 5126 | विक्रम संवत् - 2081 | सितम्बर - 2024

मूल्यः १२

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-31654408
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
फोन नं. : 9415212142
ईमेल : umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

आये जाने लव-कुश के बारे में

लव और कुश राजा राम और माता सीता के पुत्र थे। इनका जन्म महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में हुआ था। दन्त कथाओं के अनुसार माता सीता ने पहले लव को जन्म दिया था। एक दिन माता सीता पानी भरने के लिये कुएँ पर जा रही थी। उन्होंने एक बन्दरिया को देखा कि वह अपने बच्चे को पेट में चिपका रखा है। माता सीता को भी अपने पुत्र लव को साथ रखने की इच्छा जागृत हो गयी। वो वापस आकर लव को अपने साथ ले गयीं। इधर महर्षि वाल्मीकि ने देखा कि कुटिया में लव नहीं थे। इधर–उधर खोजने के बाद भी जब लव नहीं मिले तब महर्षि वाल्मीकि ने कुश से लव की तरह का एक बालक बना दिया क्योंकि उनको लगा कि सीता वापस आकर जब लव को नहीं पायेंगी, तब घबरा कर कुछ भी अनहोनी कदम उठा सकती है। परन्तु कुछ देर बाद जब सीता जी लव को अपने साथ लेकर लौटी, तब कुटिया में बिल्कुल लव के समान एक बच्चे को खेलता पाया। उन्होंने महर्षि वाल्मीकि से पूछा 'कि महर्षि यह किसका पुत्र है? सीता की गोद में लव को देखकर महर्षि माजरा समझ गये। उन्होंने सीता जी से कहा– बेटी! यह भी तुम्हारा ही पुत्र है। सीता जी लव के समान एक दूसरा पुत्र पाकर बहुत खुश हो गई। जब महर्षि से नाम पूछा तब वाल्मीकि जी ने कहा– बेटी, इस पुत्र का नाम कुश है। इस प्रकार लव और कुश, सीता के दो पुत्र हो गये। महर्षि वाल्मीकि की कुटिया उन्नाव जिले के परियर में स्थित है। आज यह उन्नाव जिले का एक पर्यटन स्थल है। जहाँ हजारों की संख्या में लोग दर्शन के लिये आते हैं। आज उन्नाव में एक क्षेत्र का नाम चकलवंशी है जो लव द्वारा बसाया गया था, जिसका पुराना नाम था चक–लव वंशी। अर्थात् "लव वंशियों का क्षेत्र।"

भैया–बहनों! जब समय मिले तब वाल्मीकि आश्रम देखने उन्नाव जिले के परियर अवश्य जाइयेगा। यह गंगा के किनारे बसा बहुत ही मनोरम स्थान है।

अपनी बात

हमारा देश भारत महापुरुषों की जन्मभूमि है। इस पावन धरतीपर, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, महर्षि, अरविन्द जैसे सन्त और राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध जैसेअनेक विश्वप्रसिद्ध अवतारी महापुरुष पैदा हुए हैं। इन्होंने हमारी सनातन संस्कृतिका झंडा पूरे विश्वमें लहराकर विश्वको सत्य, प्रेम, अहिंसा, करुणा, क्षमा, धैर्य, उदारता और सहिष्णुता आदि दिव्य गुणोंकी पावन गंगामें सराबोर कर तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम् 'के सूत्र में बाँधकर विश्वको मानव एकताका महान् संदेश दिया और मानवता का रक्षण किया है।

सामान्य मनुष्य दुःखों के आगमन से, शरीर में व्याधि होते ही विकल हो जाता है। महापुरुषों के सिरपर सींग नहीं होते, वे भी हमारी ही तरह दो हाथ–पैर वाले साढ़े तीन हाथके मनुष्य ही होते हैं। किंतु उनमें यह विशेषता होती है कि दुःखोंके आने पर वे हमारी तरह अधीर नहीं हो जाते, उसे प्रारब्ध कर्मों का भोग समझकर वे प्रसन्नतापूर्वक सहन करते हैं। बस, इस एक गुण से वे जगद्वन्द्य और सबके आदरणीय समझे जाते हैं। तो फिर हम क्यों नहीं महापुरुषों की राह पर चलें? अधीर न होकर धैर्यवान बनें।

यह सत्य है कि संसार में जिसने शरीर धारण किया है, उसे सुख–दुःख दोनों का ही अनुभव करना पड़ता है। केवल सुख–ही–सुख या केवल दुःख–ही–दुःख प्राप्त हो ऐसा कभी नहीं हो सकता। यह निश्चित है कि, शरीर धारण करने वाले हर किसी को दुःख–सुख दोनों ही भोगने पड़ते हैं, तो फिर दुःखमें हम अधिक उद्विग्न क्यों हों और सुख में फूलकर कुप्पा क्यों हो जायँ ? दुःख–सुख तो शरीरके साथ लगे ही रहते हैं। शरीर तो व्याधियों का घर है। जाति, आयु और भोगोंको साथ लेकर ही यह शरीर उत्पन्न होता है। पूर्वजन्म के जो भोग हैं, वे तो भोगने ही पड़ेंगे। चीं–चपड़ करने से काम नहीं चलेगा। हम चाहे जो करें भोग बिना अपनी अवधि पूर्ण किये पीछा नहीं छोड़ता। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। हमें सोचना चाहिये, हमारे ही ऊपर ऐसी विपत्तियाँ आयी हैं, सो बात नहीं। विपत्तियों का शिकार किसे नहीं बनना पड़ता ? त्रैलोकेश इन्द्र ब्रह्महत्या के भयसे वर्षों घोर अन्धकार में पड़े रहे। चक्रवर्ती महाराज हरिश्चन्द्र डोमके घर जाकर नौकरी करते रहे। उनकी स्त्री अपने मृत बच्चे को जलाने के लिये कफन तक नहीं प्राप्त कर सकी। जगत्के आदिकारण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी चौदह वर्षों तक घोर जंगलों की खाक छानते डोले। वे अपने पिता चक्रवर्ती महाराज दशरथ को पावभर आटेके पिण्ड भी न दे सके जंगल के इंगुदी–फलों के पिण्ड से ही उन्होंने चक्रवर्ती राजाकी तृप्ति की। शरीरधारी कोई भी ऐसा नहीं है, जिसने विपत्तियों का कडुआ स्वाद न चखा हो।

अस्तु हम धैर्य धारण करके सुख–दुख की स्थिति को देखते रहें। जिन्होंने सुख–दुख के रहस्यको समझकर धैर्यका आश्रय ग्रहण किया है, संसार में वे ही सुखी समझे जाते हैं। ऐसे ही पुरुषोंके गलेमें कीर्ति–देवी जयमाला डालती हैं, ऐसे ही पुरुषों की संसार पूजा करता है और ऐसे ही महापुरुष प्रातः स्मरणीय समझे जाते हैं।

लोक–दृष्टिमें जरा, मृत्यु और व्याधियाँ ज्ञानी–अज्ञानी दोनोंको ही होती हैं, किंतु ज्ञानी उन्हें अवश्यम्भावी समझकर धैर्य के साथ सहन करता है और अज्ञानी विकल होकर विपत्तियों को और बढ़ा लेता है। थोड़ी या कम सभी शरीरधारियों को आपदाएँ झेलनी पड़ती हैं। किसी ने कहा है:–

''ज्ञानी काटे ज्ञान ते, अज्ञानी काटे रोय। मौत, बुढ़ापा, आपदा, सब काहू को होय।।''

जो धैर्य का आश्रय नहीं लेते, वे दीन हो जाते हैं, परमुखापेक्षी बन जाते हैं, इससे वे और भी दुखी होते हैं। संसार में परमुखापेक्षी बनना, दूसरे के सामने जाकर गिड़गिड़ाना, दूसरेसे किसी प्रकारकी आशा रखना–इससे बढ़कर हमारे लिए दूसरा कष्ट और कोई नहीं है। कदाचित इन तथ्यों को हम, हमारे शिक्षक और विद्यार्थी समझकर तदनुसार विपरीत परिस्थितियों में धैर्यवान बन सकें तो सभी का जीवन सार्थक सिद्ध होगा। इन्हीं आशा और आकांक्षाओं के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

विश्व के कुछ देशों में शिक्षकों को सम्मान देने के लिए शिक्षक दिवस का आयोजन किया जाता है, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिवस भरतवर्ष में रिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

शिक्षक दिवस के पावन पर्व पर प्रत्येक छात्र को अपने गुरु का मान–सम्मान देने और उनकी आज्ञा मानने का प्रण लेना चाहिए।

यह शिक्षक दिवस गुरु की महत्ता बताने वाला प्रमुख दिवस है। शिक्षक का समाज में आदरनीय व सम्माननीय स्थान होता है। भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ0 राधाकृष्णन का जन्मदिन एक पर्वकी तरह है जो कि शिक्षक समुदाय के मान सम्मान को बढ़ाता है।

हिन्दू पंचांग के अनुसार गुरुपूर्णिमा के दिन को गुरु दिवस के रूप में स्वीकार किया गया है। बहुत सारे कवियों ने गुरु की महत्ता पर प्रकाश डाला है।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

कबीरदास द्वारा लिखी गयी उक्त पंक्तियाँ जीवन में गुरु के महत्त्व को पर्णित करने के लिए पर्याप्त है, भारत में प्राचीन समया से ही गुरु–शिष्य परम्परा' चली आ रही है, गुरुओं की महिमा का वृत्तान्त ग्रन्थों में भी मिलता है। समाज में रहने के योग्य हमकों केवल शिक्षक ही बनाते है, यद्यपि परिवार को बच्चे का प्रारंभिक विद्यालय का दर्जा दिया जाता है, परन्तु जीवन जीने की वास्तविक शिक्षा और संस्कार उसे शिक्षक ही सिखाता है। समाज के शिल्पकार शिक्षक विद्यार्थी को केवल सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित ही नहीं करते है, बल्कि उनके सफल जीवन की नींव शिक्षकों के द्वारा ही रखी जाती है।

गुरु, शिक्षक, आचार्य, अध्यापक या टीचर ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को व्याख्यातित करते है, जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है इन्ही शिक्षकों को मान–सम्मान 'आदर धन्यवाद देने के लिए जो दिन निर्धारित है 'उस दिन को हम शिक्षक दिवस के रूप में जानते है।

शिक्षक दिवस के सही महत्व को समझना चाहिए कि हमें शिक्षकों द्वारा प्रदत्त हमारे सुसंस्कार हमारे व्यावहारिक जीवन में रहना चाहिए जैसे अपने से श्रेष्ठ जनों का आदर, गुरुका आदर–सत्कार, अपने गुरु की बात ध्यान से सुनना और समझना और स्वयं के अन्दर क्रोध, ईर्यात्यागकर संयम धारण करना तभी शिक्षक दिवस को मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी।

भारतीय सस्कृति में गुरु के उच्च स्थान की

झलक मिलती है। भारतीय बच्चे प्राचीनकाल से ही 'आचार्य देवो भवः' का वाक्य सुनकर बड़े होते है। माता–पिता के नाम के कुल की व्यवस्था तो सारे विश्व के मातृ या वितृ सत्तात्मक समाजों में चलती है परन्तु गुरुकुल का विधान भारतीय संस्कृति की अनूठी विशेषता है कच्चे घड़े की भाँति विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को जिस रूप में ढ़ालों वे ढ़ल जाते है उन्हें विद्यालय में जो सिखाया जाता है, वे वैसा ही व्यवहार करते हैं। सफल जीवन के लिए गुरुद्वारा प्रदान की गयी शिक्षा बहुत उपयोगी है। शिक्षक का संबंध केवल शिक्षा से ही नहीं बल्कि जीवन में आगे बढ़ने के सुझाव देता है और प्रेरित करता है।

शिक्षक उस माली के समान है, जो एक बगीचे को भिन्न–2 रूप–रंग के फूलों से सजाता है। जो छात्रों के ओंठों पर भी मुस्कराकर चलने को प्रोत्साहित करता है। जीवन जीने का कारण समझाता है।

शिक्षक ही वह धुरी होता है, जो विद्यार्थी को सही गलत की पहचान करवाते हुए बच्चों को अन्तर्निहित शक्तियों को अच्छे बुरे विकसित करने की पृष्ठभूमि तैयार करता है। वह प्रेरणा की फुहारों से बालमन को सींचकर उसकी नींव मजबूत करता है, तथा सर्वांगीण विकास के लिए मार्गप्रशस्त करता है, पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ नैतिक मूल्यों संस्कार रूपी शिक्षा के माध्यम से एक शिक्षक ही शिष्य में अच्छे चरित्र निर्माण करता है। एक ऐसी परम्परा सी हमारी संस्कृति में थी, इसी लिए कहा गया है कि –

"गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात परबृह्म तस्मैः श्री गुरुवेः नमः।।

कई ऋद्धि मुनियों ने अपने गुरुओं से तपस्या की शिक्षा लेकर अपने जीवन को सार्थक बनाया। एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य को अपना मनसा गुरु मानकर उनकी प्रतिमा अपने समक्ष रखकर धनुर्विद्या सीखी। यह उदाहरण प्रत्येक शिष्य के लिए प्रेरणा दायक है।

गुरु–शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण और पवित्र अंग है। किसी छात्र के जीवन में कभी न कभी ऐसे शिक्षक का आगमन हुआ हो जिसने उसके जीवन की दिशा और दशा बदल दी या जीने का सही ढंग सिखाया हो।

अपने द्वारा अपना संसार-समुद्र से उद्धार करे और अपने को अधोगति में डाले, क्योंकि यह मनुष्य आपका ही तो अपना मित्र है और आप ही अपना शत्रु है।

हमेशा गलती मस्तिष्क में रखो दोहराओ मत

Always keep the mistake in your mind and don't repeat it

कछुआ और खरगोश की कहानी हम सब जानते हैं। शर्त लगी और दौड़ शुरू हुई। खरगोश ने दौड़ प्रारम्भ करने के लिए अच्छी प्रकार से शुरूआत की, किन्तु हार गया। कारण स्पष्ट है Slow steady and wins the race. लगातार बिना रूके जो चलता है वही जीतता है। खरगोश को अपने ऊपर over confidence था कि मुझे कोई हरा ही नहीं सकता, जिसके कारण आरम करने लगा और हार गया।

निराश न होकर आत्म समीक्षा करें (Don't be disappointed and review yourself)– कहानी यहीं खत्म नहीं होती है। इससे भी अधिक रोचक वृतांत कहानी में आगे चलता है। खरगोश को इस हार से दुःख जरूर हुआ, किन्तु निराशा नहीं हुई। उसने अपनी आत्म समीक्षा की। उसने अनुभव किया कि दौड़ हारने का मुख्य कारण अपने ऊपर हद से अधिक आत्मविश्वास, लापरवाही व घमण्ड था। यदि उसने कछुआ को हल्के में (Underestimates) न लिया होता तो कछुआ किसी भी हालत में उसे हरा नहीं सकता था। इसलिए उसने कछुए को एक और दौड़ के लिए ललकारा। कछुआ सहमत हुआ। इस बार खरगोश ने शुरू से अन्त तक बिना रूके निरन्तरता के साथ दौड़ लगाई और कई मील के फासले से दौड़ जीत गया। इससे स्पष्ट होता है कि किसी भी प्रतियोगिता में विजय प्राप्त करने के लिए निरन्तरता आवश्यक है। अगर आपकी संस्था में दो व्यक्ति हैं उनमें से एक धीमा और विश्वासी हो तथा दूसरा दूरगामी सोच रखने वाला तेज व उससे भी अधिक विश्वासी हो, तो दूसरा संस्था के हित की दृष्टि से ज्यादा लाभकारी होगा।

अपनी क्षमता के अनुसार रणनीति बनाओ (Prepare your strategy according to your ability) – कहानी यहाँ भी समाप्त नहीं होती है। कछुआ ने इस बार कुछ सोचा और महसूस किया कि इस प्रकार के प्रारूप से खरगोश को हराया नहीं जा सकता है। उसने कुछ देर सोचने–विचारने के बाद खरगोश को एक और प्रतियोगिता के लिए बुलाया। इस बार मार्ग में थोड़ा परिवर्तन किया था। खरगोश राजी हो गया और दोनों ने दौड़ प्रारम्भ की। खरगोश ने तेजी और निरन्तरता को बरकरार रखते हुए दौड़ लगाई और लगाता रहा जब तक कि वह एक बड़ी नदी के किनारे तक न पहुंच गया। दौड़ का अन्तिम छोर (Finishing point) दो किमी० दूर नदी के दूसरी ओर था। खरगोश बैठकर सोचता रहा क्या करूँ ? तब तक कछुआ धीरे–धीरे आकर नदी में उतरा और तैरता हुआ नदी पार करने के उपरान्त दो किमी दूरी पर स्थित (Finishing point) अंतिम छोर तक पहुँच गया और दौड़ जीत गया। इससे स्पष्ट होता है कि अपनी Strength के According अपनी Strategy बनायें। अपने गुणों को पहचानें और खेल के मैदान को अपनी क्षमता के अनुरूप बदलें। अपनी Skill के अनुरूप काम न केवल आपकी पहचान बनाता है बल्कि आपको आगे बढ़ने का अवसर भी प्रदान करता है।

ऐसे मित्र बनाएं जिनकी ताकत आपकी कमजोरी हो (Keep friend with the persons whoses trengths are your weaknesses) इस बीच खरगोश व कछुआ अच्छे मित्र बन चुके थे और वे एक साथ बैठकर चिन्तन करने लगे। अब उन्होंने अनुभव किया कि पिछली दौड़ और अच्छे से दौड़ी जा सकती थी। दोनों ने तय किया कि पिछली दौड़ को फिर से दौड़ा जाये। कछुए ने कहा किन्तु एक बात ध्यान रखनी होगी कि दौड़ हम एक टीम के रूप में दौड़ेंगे। इस बात पर खरगोश ने सहमति जताई। उन्होंने दौड़ना प्रारम्भ किया। दौड़ देखने वाले बाल–वृद्ध, नर–नारी सभी कौतुहलतापूर्वक दौड़ को देखकर हर्षित थे और

तालियां बजा रहे थे। कारण एक Team spirit का था। दोनों प्रतिभागी अत्यन्त प्रसन्न थे। पहले खरगोश ने कछुए को अपनी पीठ पर बैठाया और नदी किनारे तक ले गया। और दोनों गीत गा रहे थे–

हम मस्तों में आन मिले कोई हिम्मत वाला रे।
अरे कोई हिम्मत वाला रे,
अरे कोई ताकत वाला रे।।
दल बादल सा निकल पड़ा,
ये दल मतवाला रे।
अरे कोई हिम्मत वाला रे,
अरे कोई हिम्मत वाला रे।।
बिजली सी तड़कन नस–नस में,
आज नहीं हम अपने बस में।
नये खून में लहरें लेती जीवन ज्वाला रे।
अरे कोई हिम्मत वाला रे,
अरे कोई ताकत वाला रे।
हम मस्तों में आन मिले
हम मस्तों में आन मिले कोई हिम्मत वाला रे।
तूफानों से टक्कर लें हम, पर्वत के दो टूक करें हम।
बहुत दिनों अन्याय का हमने, बोझ संभला रे।
हम मस्तों में आन मिले कोई ताकत वाला रे।
अरे कोई हिम्मत वाला रे, अरे कोई ताकत वाला रे।।

नदी किनारे पहुंच कर पारी बदली अब कछुआ की पीठ पर खरगोश था। धीरे से कछुआ पानी में उतर गया और धीरे–धीरे नदी पार करा दी। फिर नदी के दूसरे किनारे पर पहुंच कर खरगोश ने कछुए को अपनी पीठ पर बैठा लिया और अन्तिम छोर के लिए दौड़ लगा दी। दोनों अंतिम छोर (Finishing point) पर एक साथ पहुंच गये। पिछली सभी दौड़ों के मुकाबले आज उनके चेहरे पर सर्वाधिक प्रसन्नता दिखाई पड़ रही थी। दोनों ने अनेक प्रकार के पारम्परिक खेल खेले। जैसे लंगड़ी छू लंगड़ी कबड्डी, ढई फोड़, गेंद तड़ी और मस्ती भी खूब की।

Star player की अपेक्षा Team player ज्यादा अच्छा होता है (A Team player is better than a star player) व्यक्तिगत प्रतिभा तथा क्षमता अच्छी होती है जो किसी Player को Star player बनाती है। पर जब तक आप Team में काम करना नहीं सीखेंगे और एक दूसरे की क्षमता को काम में नहीं लगायेंगे तब तक आप हमेशा अपेक्षा से कम प्रदर्शन करते हैं। क्योंकि परिस्थिति कभी आपको अच्छा प्रदर्शन करा सकती है तो कभी दूसरे को Team work की भावना परिस्थिति के अनुसार नेतृत्व पर आधारित होती है जिसमें व्यक्ति का प्रदर्शन परिस्थिति के सामने हार मान जाता है और परिस्थिति नेतृत्व लेती हैं।

हमें सकारात्मक सोच और कोशिश करते रहना चाहिए (Always Be positive and try again and again) असफलता मिलने के बाबजूद भी कछुआ और खरगोश ने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी। खरगोश ने विचार किया था (असफल होने पर) कि वह अधिक मेहनत करेगा और अन्त तक कोशिश नहीं छोड़ेगा। कछुआ ने अपना मार्ग बदल दिया क्योंकि उसने पहले से ही अधिक मेहनत शुरू कर दी थी। जितनी वह कर सकता था। जीवन हेतु कभी असफलता में अधिक मेहनत करनी पड़ती है तो कभी चतुरता पूर्वक रास्ता बदलना पड़ता है। कभी–कभी स्थिति ऐसी भी आती है कि दोनों को अपनाना पड़ता है। कछुआ ने खरगोश से कहा चाहे जैसी भी परिस्थितियाँ मेरे सामने आयें। मैं विशेष व निरन्तर प्रयास करता रहूँगा। मेरा उत्साह किसी भी प्रकार से कम न होगा। मैं जितना अधिक उत्साहित रहूँगा, उतना ही अपनी प्रगति के साथ–साथ दूसरों की प्रगति में भी योगदान दे सकूँगा। यह सुन खरगोश ने कहा कि हमारे अन्दर जितनी अधिक संवेदनशीलता होती है, उतनी ही बारीकी से हम लोगों के दुःख व दर्द को अच्छे से पहचान जाते हैं।

"यदि आप किसी प्रयास में असफल हुए है तो इसे आप अपनी हार के रूप में न देखें। यह विश्लेषण करने का प्रयास करें कि क्या गलत हुआ? उसे आप कैसे सुधार सकते हैं? उसे मस्तिष्क में रखें दोहराये नहीं. अपने तरीकों को संशोधित करेंगे तो सफलता निश्चित ही मिलेगी।

शिक्षक दिवस पर शिक्षक के कर्त्तव्य, दायित्व एवं जिम्मेदारियाँ

– कमल कुमार
संयोजक
भारतीय शिक्षा परिषद

भविष्य के कर्णधारों को एक ऐसी शिक्षण पद्धति की आवश्यकता है जिसका स्वरूप उन्हें विश्व में कन्धे से कन्धा मिलाकर बलने योग्य बना सके, शिक्षित व सभ्य समाज की कल्पना तभी हो सकती है, जब भविष्य की पीढ़ी को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्राप्त हो, अतः शिक्षक वास्तव में शिक्षक केवल एक छात्र का नहीं अपितु देश व समाज के सम्पूर्ण भविष्य को सुधारने का एक सशक्त माध्यम है। प्रारम्भ से ही हमारी समृद्ध सस्कृति में ज्ञान प्रदान करने वाले गुरू को सर्वोच्च एवं पूजनीय स्थान दिया गया है। शिक्षा केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक प्रगतिशील व सभ्य समाज की धूरी है। अतः शिक्षा के स्तर को सुधारना अत्यन्त आवश्यक है और यह गुरुत्तर दायित्व केवल शिक्षक ही निभा सकते है।

❑ **आचार्य देवोभव :** अपने विद्यालयों में शिक्षक को आचार्य कहा जाता है। यह सम्बोधन सोच विचार कर ही दिया गया है। आचार्य यानि जिसका आचरण व्यवहार आदर्श के रूप में सभी के सामने आता है। वह जीवन जीने की शिक्षा अपने आचरण के माध्यम से बच्चों के हृदयपटल तक पहुंचाता है। छोटे–छोटे बच्चे देव सदृश्य आचार्य की बात को अपने माता–पिता से भी ज्यादा मानते हैं। उनका आदर और सम्मान भी भगवान से बढ़कर करते हैं, तभी तो मातृ देवोभवः, पितृ देवोभवः के साथ आचार्य देवोभवः भी माना है। यह तभी साकार हो सकेगा जब आचार्य स्वयं अपने आचरण से यह विचार सिद्ध कर दे। आचार्य के कौन कौन से कर्तव्य व जिम्मेदारियाँ हैं, जिनको जानकर तदनुसार अपना आचरण एवं व्यवहार करने पर आदर्श/श्रेष्ठ आचार्य की श्रेणी में आ सकेगें।

❑ **श्रेष्ठ आचार्यों की कसौटियाँ :**

1. जिसने अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित कर तद्नुसार इस दायित्व का भार सम्भाला हो। आचार्य एक दिन में नहीं बनता अतः इस हेतु सतत कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। जैसे अपना स्वास्थ्य ठीक रखना, स्वाध्याय नियमित करते रहना, नवीन ज्ञान अर्जित करना, नयी तकनीकी की जानकारी प्राप्त कर उसका उपयोग करना व अपने को अपडेट व अपग्रेड रखना।
2. वह अपने जीवन में सद्गुणों से परिपूर्ण हो. जीवन में शुचिता व पवित्रता परिलक्षित होती हो। प्रमाणिकता व्यवहार में झलकती हो, सत्यनिष्ठा होठों पर विराजमान हो। अस्पृश्यता जिससे कोसों दूर हो, भेद–भाव रहित निष्पक्ष हृदय हो. कामकोध, मद लोभ, मोह जिसे स्पर्श न कर पाते हों, और आलस्य भी जिसके पास आने से डरता हो। संवेदना, करूणा, परोपकार व उदारता जिसके रोम रोम में बसती हो।
3. वह छात्रों से अपने छोटे भाई बहिनों के समान प्रेम करता हो। उनकी भावनाओं को समझता हो। वह छात्रों के चेहरे को पढ़कर अनुमान लगा सकता हो कि छात्र क्या चाहता है? जो छात्रों के प्रति संवेदनशील

हो, जिज्ञासु हो और छात्रों की जिज्ञासा बढ़ाने में combiflame का कार्य करता हो।

4. वह आचार्य श्रेष्ठ है जिसने समाज का अध्ययन गम्भीरता के साथ किया हो। उसकी समस्याएं समझी हों उनका हल ढूंढ निकालने का सार्थक परिणामकारी प्रयास किया हो। और दृढ़ता के साथ समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए कृत संकल्प हो ।
5. अपना यह कार्य ईश्वरीय कार्य है अतः परमात्मा की असीम कृपा एवं उसकी शक्ति पर विश्वास हो और उसके प्रति पूर्ण समर्पण की भावना हो। एक शिक्षक के कर्तव्य व जिम्मेदारियां बहुत हैं। सारा समाज आज आचार्य रूपी शिक्षक की ओर टकटकी लगाये है। समाज को दिशा देने का, समाज सुधार करने का, अपने स्वयं का आदर्श समाज के सामने रखने का दायित्व निभा सके।

शिक्षक के कर्तव्य व जिम्मेदारियों को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं–

❑ **छात्रों के प्रति कर्तव्य :** एक बार छात्र के सम्पर्क में आने पर उसके जीवन की दिशा निर्धारित करने हेतु उसको ठीक समझना, उसके परिवार व परिस्थितयों का समयानुकूल विशलेषण करना ।

- छात्र को अपने जीवन क लक्ष्य निर्धारित करने हेतु योग्य मार्ग दर्शन देना। छात्र को उस पथ पर चलने के लिए प्रेरित करना, जित पथ पर चल कर उसे यश व कीर्ति प्राप्त हो सके ।
- एक श्रेष्ठ शिक्षक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देकर उसके अध्ययन में आ रही कमियों को व व्यवहार आचरण के दोषों को सहजता के साथ दूर करना। छात्र के अन्दर कौन सी Quality है इसका अहसास कराते हुये उसमे अभिवृद्धि करने हेतु प्रेरित करना ।
- मनोवैज्ञानिक, तार्किक एव तात्विक आधार पर छात्र की समस्याओं को समझना और सुलझाना। उसके दोषों को केवल उसे ही, अकेले में सौम्यतापूर्वक बताना, गुणों की चर्चा सार्वजनिक करनी चाहिए। ऐसा करने से छात्र के व्यवहारिक जीवन में निखार आता है।
- शिक्षक को चाहिए कि वे इस बात का ध्यान रखें कि छात्र का शैक्षणिक ही नहीं बल्कि भौतिक व आध्यात्मिक विकास भी हो। वह जिम्मेदारी पूर्वक समाज के छोटे–छोटे कार्यों में लगे, इसकी चिन्ता करना शिक्षक का नैतिक दायित्व है। अन्त में इतना ही कहना है कि

A teacher is not only subject teacher-
1- He is a facilitator of their students-
2- He is a motivator of their students-
3- He is a guardian of their students-
4- He is a activator of their students-
5- He is a friend of their students-
6- He is a collaborator of their students
7- He is a coordinator of their students-
8- He is a creator of their students-
9- He is an accelerator of their students-
He is not limited to subject teaching-

2. **विद्यालय के प्रति कर्तव्य :** शिक्षक विद्यालय का आधार स्तम्भ हुआ करता है। विद्यालय में तीन प्रकार के कार्य हैं–पहला है शैक्षणिक दृष्टिकोण, दूसरा है व्यवस्थात्मक दृष्टिकोण, तीसरा है– सामाजिक दृष्टिकोण।

● **शैक्षणिक दृष्टिकोण :-** आदर्श शिक्षक होने के लिए सबसे महत्व का बिन्दु उनका शैक्षिक पक्ष है। जिसमें आने वाले कर्तव्य व जिम्मेदारियां निम्नवत् है –

1. शिक्षक को अपने विषय का पूर्ण एवं शुद्ध ज्ञान होना चाहिए। अपने विषय पर उसका अधिकार हो एवं अपने स्वाध्याय से विषय की हो रही प्रगति का भी ज्ञान उसे बढ़ाते रहना चाहिए।
2. प्रशिक्षण के दौरान बताई गयी शिक्षण विधियों एवं तकनीकी जानकारी को आत्मसात् करने की कुशलता हासिल करें ताकि शिक्षण कार्य प्रभाव व परिणामकारी हो सके।
3. प्रतिदिन दैनन्दिनी लिखें जिससे प्रगति का आंकलन हो सके। प्रतिदिन पढ़ाये जाने वाले पाठ की योजना बनाएं। विषयगत पूर्व तैयारी के साथ कक्षा में जायें।
4. कक्षा का अनुशासन शिक्षक की वक्तृत्व कला, विषय–नियोजन, पाठय सामग्री आदि पर निर्भर करता है। अध्यापन कार्य कम, स्वतः स्वध्याय ज्यादा तथा खोज कर स्वतः छात्र सीखें, यह कार्य अधिक हो।
5. पाठ्य सामग्री एकत्रित करना तथा स्वयं निमार्ण करना छात्रों का इस निमित्त सहयोग लेना न भूलें। छात्रों का विश्वास शिक्षक में तथा शिक्षक का विश्वास छात्रों में हो यह अतीव आवश्यक है।
6. छात्रों के आत्मविश्वास को गति दें। छात्र दैनन्दिनी व्यवस्थित हो शिक्षक द्वारा भरी जाने वाली प्रविष्टियां सुस्पष्टों शब्दांकों में भरी हो।
7. शिक्षक की भाषा मधुर, सौम्यतापूर्ण, शुद्ध, सुस्पष्ट, श्रवणीय, कर्णप्रिय वाणी में हो। अद्भुत ओजस्वी वक्तृत्व कला हो ।
8. गृह कार्य व कक्षा कार्य की उत्तर पुस्तिकाओं की सटीक एवं त्रुटिहीन जांच कार्य नियमित होना आवश्यक है।
9. छात्र का सत्तत, पक्षपातहीन एवं न्याय संगत मूल्यांकन हो। परीक्षाएं तो शैक्षिक प्रगति की आख्याएं देती है. परन्तु भावात्मक व गुणात्मक मूल्यांकन छात्र के सानिध्य में रहकर, उसे देखकर ही होता है। अगर "वह मेरा छात्र है" यह भाव रहा तो जीवन यह पर्यन्त संयोजन का काम करता है।

व्यवस्थात्मक दृष्टि कोण :- व्यवस्थात्मक दृष्टि कोण से सम्बन्धित शिक्षण की प्रमुख जिम्मेदारियां निम्नवत् हैं–

1. अपने प्रधानाचार्य एवं सहकर्मियों से अपना घनिष्ट सम्पर्क हो जिसके कारण उनका आपके ऊपर और आपका उनके ऊपर पूर्ण विश्वास हो। आपको सौंपा हुआ कार्य, आपने स्वयं सानन्द लिया है, यह विचार कर उसे उतने ही विश्वास के साथ पूर्ण करें ।
2. विद्यालय की प्रतिदिन अनेक व्यवस्थाएं रहती हैं जैसे वन्दना, अनुशासन, साजसज्जा, जल, चिकित्सा, भोजन, स्वच्छता, घोष, शारीरिक, वाचनालय, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वाहन, बागवानी आदि उन्हें छात्रों के सहयोग से सम्भालना।
3. विद्यालय के कुछ क्रिया–कलाप रहते हैं जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम, देशदर्शन, पिकनिक, खेलकूद, प्रश्नमंच, वैदिक गणित–विज्ञान मेला, सांस्कृतिक महोत्सव, गोष्ठियां, छात्र संसद, बालभारती, बाल बैंक

आदि छात्रों की सर्वांगीण उन्नति हेतु मार्ग दर्शन कर अवसर उपलब्ध कराना।

4. अलग अलग प्रकार के रजिस्टर्स एवं फाइलें यथा–उपस्थित पंजी, परीक्षा पंजी, प्रश्नपत्र पत्रावली, छुट्टी के आवेदन पत्र, प्रगति पत्र आदि को ठीक रखना। पूर्ण ईमानदारी से अपना आर्थिक व्यवहार रखना।
5. अपनी कक्षा की रचना, फर्नीचर, साज–सज्जा आदि सुसज्जित, सुशोभित व आर्कषक लगे। यह शिक्षक की नैतिक जिम्मेदारी है।

● **सामाजिक दृष्टि कोण :-** यह भावना भी एक श्रेष्ठ शिक्षक के हृदय में परिलक्षित होनी चाहिए। अपने सम्पर्क में आने वाले छात्र के परिवार से घनिष्ठ सम्पर्क हो। छात्र के वंशानुक्रम एवं वातावरण का अध्ययन कर उचित मार्ग दर्शन प्रदान करने की क्षमता हो।

1. अभिभावक सम्पर्क में जाकर धीरे–धीरे घर के सदस्यों को अपने आचार–व्यवहार से प्रभावित करें। घर में धार्मिक, आध्यात्मिक व नैतिक वातावरण निर्माण हेतु प्रेरित करें।
2. परिवारिजनों का ईश्वर के प्रति प्रगाढ़ भक्ति, श्रद्धा, आस्था व विश्वास जगायें। मैनें जिस समाज में जन्म लिया है, उसका ऋण मेरे ऊपर है, मुझे समाज को कुछ देना है, मेरा सर्वस्व समाज के लिये है। यह विश्वास जगाया तो अपने कर्तव्य का बोध हो जाता है।
3. परिवार में राष्ट्र भक्ति जागरण हो. समपर्ण व त्याग की भावना हो, राष्ट्र अमर रहेगा यह भावना समाज में निर्माण करें। सदगुण युक्त जीवन–आदर्श लिया हुआ राष्ट्र विश्व वन्दनीय होगा। भारत विश्व गुरु होगा। अपनी मातृभूमि भारत जगदगुरू के उच्च स्थान पर विराजमान हो यह शिक्षक के हृदय में होना चाहिए।
4. भारत भूमि विश्व वन्दनीय रहे वह अपनी ज्ञान परम्परा से विश्व को अलोकित करती रहे। शिक्षक को यह कर्तव्य सफलता पूर्वक पालन करने हेतु परमपिता परमात्मा उचित बुद्धि, शक्ति, भक्ति व बल प्रदान करें ।

चारों तरफ स्वदेशी का परिवेश रहना चाहिए,
गीता छपा कृष्ण का संदेश रहना चाहिए।
हम आज हैं, कल ना रहें,
किन्तु यह देश रहना चाहिए।।

कजरी गीत

बरसा सावन में, मेघ घनघोर सुनो।
वृन्दावन की ओर सुनो ना।।
भीगे ब्रज के नर–नारी, भीगे गैया बछड़ा सारी–2
ग्वाल–बाल भीगे, भीगे माखन चोर सुनो
वृन्दावन की ओर सुनो ना।
बरसा सावन में
वृन्दावन की ..... ।
भीगी गोपिका हमारी, वृषभानु की दुलारी–2
भीगी साड़ी और, पीताम्बरोर छोर सुनो
वृन्दावन की और सुनो ना।
बरसा सावन में ..... ।
वृन्दावन की ..... ।
गिरि को धारे गिरधारी, भई निहाल प्रजा सारी–2
कष्ट काट दिया, उंगली का पोर सुनो। 3
वृन्दावन की ओर सुनो ना ।
बरसा सावन में ..... ।
वृन्दावन की ..... ।
दृश्य देख देव ललचे, रूप बदल ब्रज में पहुँचे–2
उनको देख प्रभु हो गये विभोर सुनो
वृन्दावन की ओर सुनो ना।
बरसा सावन में मेघ ..... ।
वृन्दावन की ..... ।

आँखों में क्या है.....

माता की आँखों में ममता है

भाई की आँखों में प्यार है

पिता की आँखों में फर्ज है

मित्र की आँखों में सहयोग है

अमीर की आँखों में घमण्ड है

बहन की आँखों में स्नेह है

शिष्य की आँखों में आदर है

गरीब की आँखों में आशा है

दुश्मन की आँखों में बदला है

सज्जन की आँखों में दया है

माँ की ममता

मेरी माँ की ममता सबसे न्यारी
रूठ जाओ जिससे तब
स्नेह से सींचा जिसने मुझे
वो मेरी माँ की ममता सबसे न्यारी
मैंने शरारतों से परेशान किया सबको
किन्तु कभी हाथ न उठा मुझ पे जिसका
मेरी माँ की ममता सबसे न्यारी
बचाये रखे हर बुरी नजर से हमें बांधकर एक धागा
मेरी माँ की ममता सबसे न्यारी वो
छुपाये वर्व सारे अपने दिल में
प्यार लुटाये सबपे उनके
मेरी माँ की ममता सबसे न्यारी।

सामान्य ज्ञान - रोचक प्रसंग

गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त का जीवन

प्रारंभिक जीवन : महान ज्योतिषाचार्य ब्रह्मगुप्त का जन्म 598 ईस्वी के आसपास माना गया है। कहते हैं कि उनका जन्म वर्तमान राजस्थान के भीनमाल में हुआ था। भीनमाल प्राचीनकाल में भीलामाला के नाम से प्रसिद्ध था। विद्वानों के बीच उनके स्थान को लेकर मतांतर है। कुछ विद्वान उनका जन्म स्थान गुजरात में मानते हैं। ब्रह्मगुप्त के पिता जिष्णुगुप्त थे।

उज्जैन वैधशाला के प्रमुख : ब्रह्मगुप्त एक प्राचीन भारतीय गणितज्ञ ज्योतिष विज्ञानी और खगोलशास्त्री थे। उनका अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति और द्विघात समीकरणों के अध्ययन में उल्लेखनीय योगदान माना जाता है। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत आने वाले गणितज्ञ के लिए बहुत मददगार साबित हुआ। कहते हैं कि वे हर्षवर्धन के समकालीन थे। उन्होंने कई वर्षों तक राजदरबार में ज्योतिषी के रूप में कार्य किया। बाद में वे उज्जैन स्थित खगोल वैधशाला के प्रमुख बनाए गए।

शून्य उनकी देन : विख्यात् ज्योतिषी एवं गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त का शून्य के उपयोग करने के नियम प्रतिपादित करने के लिए जाना जाता है। वे प्रथम गणितज्ञ थे जिन्होंने सबसे पहले शून्य के नियम और उनक गुणों से अवगत कराया।

उन्होंने पहली बार ही बताया कि शून्य के साथ किसी भी संख्या का जोड़ने या घटाने से उसके मान में कोई परिवर्तन नहीं होता हे। उन्होंने ही पहली बार अवगत कराया कि किसी संख्या को शून्य से गुणा करने पर संख्या का मान शून्य हो जाता है। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि किसी भी संख्या को शून्य से भाग देने पर यह असीम हो जायेगा। ब्रह्मगुप्त ने बीजगणित को अंकगणित से पृथक बताया। उन्हें अकीय विश्लेषण के लिए भी याद किया जाता है। पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण शक्ति के संबंध में भी उन्होंने कहा कि कोई भी वस्तु पृथ्वी की तरफ गिरते हैं क्योंकि पिंडो को आकर्षित करना पृथ्वी का स्वभाव में है, जैसे कि जल की हमेशा बहने की प्रकृति होती है।

खोज : ब्रह्मगुप्त को खगोलीय सिद्धांत के प्रतिपादन क लिए भी जाना जाता है। ब्रह्मगुप्त ने प्राचीन वैदिक खगोलविदों के विचारों का भी खंडन किया। जिसमें माता जाता है कि सूर्य की पृथ्वी से दूरी चदमा की तुलना बहुत कम है।

ब्रह्मगुप्त को कुछ द्विधात अनिश्चित समीकरणों को हल करने के लिए भी जाना गया। इसी समीकरण को पश्चिमी देशों में 'पेल समीकरण' के नाम से जाना जाता है।

निधन : प्राचीन गणितज्ञ और ज्योतिषाचार्य ब्रह्मगुप्त का सन् 680 ईस्वी में निधन हो गया। ब्रह्मगुप्त आज हमारे बीच नहीं है लेकिन उनका योगदान भारतवर्ष को हमेशा गौरवान्वित करता रहेगा।

पुरस्कार व सम्मान : इस प्राचीन गणितज्ञ को गणितज्ञ भास्कर द्वारा 'गणक्चूड़ामणि' का खिताब प्रदान किया गया।

ब्रह्मगुप्त की रचनाएं : प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री ने कई ग्रंथों की रचना की। उनके द्वारा रचित ग्रंथों में ब्रह्मस्फुट सिद्धांत और 'कारण–खण्ड खाद्यका' सबसे प्रसिद्ध माना जाता है।

अपनी प्रसिद्ध ग्रंथ ब्रह्मस्फुट सिद्धांत में उन्होंने शून्य के अंकगणितीय गुणां पर विस्तृत प्रकाश डाला है उन्होंने अपने दूसरे ग्रंथ करण–खण्ड

खाद्यका में ज्योतिष और पंचांग के बारे में वर्णन किया है।

ब्रह्मगुप्त का गणित में योगदान : ब्रह्मगुप्ता का गणित में योगदान सराहनीय रहा। उन्होंने 'चक्रीय चतुर्भुज' का सूत्र दिया जो ब्रह्मगुप्त सूत्र के नाम से जाना जाता है। साथ ही उन्होंने अवगत कराया कि चक्रीय चतुर्भुज के विकर्ण एक दूसरे पर आपस में लम्बवत् होते हैं।

वैदिक गणित का परिचय, विशेषताएं एवं सूत्र

वैदिक गणित का परिचय – वर्तमान समय में जहाँ कहीं भी वैदिक गणित का पठन–पाठन हो रहा है वह मुख्यतः एक पुस्तक पर आधारित है। जिसके रचयिता हैं शंकराचार्य स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज। इस पुस्तक को उन्होंने 1957 ई. में लिखा था। इस पुस्तक में सूत्रों और 13 उपसूत्रों की चर्चा की गयी है जो कि स्वामी जी के अनुसार अथर्ववेद के किसी परिशिष्ट से लिया गया है। पारंपरिक गणित से अलग यह गणित वेदों से प्राप्त होने के कारण वैदिक गणित का नाम धारण किये हुए है।

वैदिक गणित की विशेषताएं –

1. गणना (Calculation) करने में आसान।
2. गणना करने के दौरान समय की बचत।
3. वैदिक गणित में आप सीधे उत्तर प्राप्त करते है वह भी कम से कम गलती की सम्भावना के साथ।
4. आसानी से अपने उत्तर की जांच कर सकते हैं। आंकिक योग रीति (Digital Sum Method) के प्रयोग से प्रश्न के उत्तर की जांच की जा सकती है।
5. पारंपरिक गणित (Conventional Mathematics) में हम दायें से बायें (भाग डिवीजन में बाएं से दायें) उत्तर प्राप्त करते हैं जबकि वैदिक गणित के प्रयोग से दोनों तरफ से अपने उत्तर तक पहुंच सकते हैं।
6. पूरा का पूरा गणित मात्र 16 सूत्रों और 13 उपसूत्रों पर आधारित है। ये 16 सूत्र याद रखने में आसान है और प्रयोग करने में भी आसान हैं।
7. केवल 9 तक पहाड़ा याद रखने की आवश्यकता है।
8. ज्यादातर मानसिक कार्य करने की आवश्यकता है और अभ्यास करके तो कागज कलम की आवश्यकता भी कम से कम रह जाती है।
9. वैदिक गणित के प्रयोग से तर्कशक्ति की वृद्धि होती है।
10. गणित पढ़ाने में आत्मविश्वास बढ़ जाता है और गणित रुचिकर लगने लगती है।
11. भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज (1884–1960) गोवर्धन मठ पुरी के शंकराचार्य थे। विभिन्न भाषाओं और विषयों की जानकारी थी। उनको गणित और संस्कृत के मर्मज्ञ थे। वेदों के अध्ययन के बाद उन्होंने वैदिक गणित के 16 सूत्रों को लगाया था।

वैदिक गणित के 16 सूत्र :

1. एकाधिकेन पूर्वेण
2. निखिलम् नवत श्रर्मदशतः
3. उर्ध्वतिर्यग्भ्याम्
4. परावर्त्य योजयेत्
5. शून्यं साम्य–समुच्चये
6. अनुरूप्ये शून्यं अन्यत
7. संकलन व्यवकलनाभ्यां
8. पूरणापूर्णाभ्याम

9. चलनकलमाभ्याम्
10. यावदूनम्
11. व्यष्टि–समष्टिः
12. शेषाण्यङ्केन चरमेण
13. सोपान्त्यदूयमन्त्यं
14. एक न्युनेन पुर्वेण
15. गुणकसमुच्चयः
16. गुणितसमुच्चयः

13 उपसूत्र–

1. आनुरुप्येण
2. शिष्यते रोषसंज्ञा
3. आद्यमाधेनान्त्यमन्त्येन
4. केवलैः सप्तकं गुणयात्
5. वेष्टनम्
6. यावदूनं तावदुनं
7. यावदूनं तावदूनीकृत्यवर्ग च योजयेत्
8. अन्त्ययोर्द शकेऽपि
9. अन्त्ययोरेव
10. समुच्च गुणिः
11. लोपनसीपनाभ्यां
12. विलोकनं
13. गुणित समुच्चयः समुच्चय गुणितः

पृथ्वी पर भ्रमण

एक दिन की बात है जब भगवान शिव ने माता पार्वती से कहा कि चलो पृथ्वी लोक पर भ्रमण करने चलते है। तब भगवान शिव और माता पार्वती नंदी के साथ पृथ्वी लोक पर भ्रमण करने चले जाते हैं। जब वो पृथ्वी लोक पर आते है तब भगवान शिव माता पार्वती से कहते हैं कि आप नंदी पर बैठ जायें। तब माता पार्वती नंदी पर बैठ जाती है। तब कुछ औरतें बातें करने लगती हैं कि यह स्त्री कितनी मूर्ख है स्वयं बैल पर बैठी है और अपने पति को पैदल चला रही है। तब माता पार्वती भगवान शिव से कहती हैं कि आप नंदी घर बैठ जायें, मैं पैदल चलती हूँ। तब भगवान शिव नंदी पर बैठ जाते हैं। आगे चलते ही कुछ लोग बातें कर रहे हैं कि कितना मूर्ख आदमी है कि स्वयं बैल पर है और अपनी पत्नी को पैदल चला रहा है।

यह बात सुनकर भगवान शिव नंदी से नीचे उतर जाते हैं और वह दोनों पैदल चलने लगते हैं। कुछ दूर चलने के बाद कुछ लोग बातें कर रहे थे कि कितने मूर्ख है ये दोनों सवारी होने के बाद भी पैदल चल रहे है। यह बात सुनकर भगवान शिव और माता पार्वती दोनों नंदी पर बैठ जाते हैं। कुछ दूर चलने के बाद कुछ लोग बात कर रहे थे कि ये दोनों कितने पत्थर दिल हैं उस बेचारे बैल पर दोनों बैठे हैं।

शिक्षा – इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने आप की सुननी चाहिए। हमें औरों की बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

विज्ञान के चमत्कार मनोरंजन के क्षेत्र में

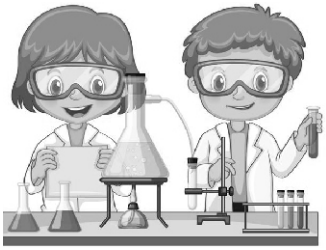

विज्ञान में मनोरंजन के क्षेत्र में अद्भुत भूमिका निभाई है। आज विज्ञान के चमत्कारों के कारण ही मानव के पास मंनोरंजन के बहुत सारे विकल्प हैं। मोबाइल, टीवी, कंप्यूटर, लैपटॉप, गेम्स आदि कुछ उदाहरण है जिससे मानव अपना मनोरंजन कर सकता है। इसके अलावा फेसबुक, इन्स्टाग्राम, यूटयूब, टिकटॉक, ट्विटर आदि कुछ ऐसे ऐप हैं जो मानव का मनोरंजन करने में सहायता करता हैं।

जुलाई 2023 में मार्क जकरबर्ग ने 'थ्रेड्स" नामक एक नया सोशल मीडिया प्लेटफार्म लॉंच किया है, जो विश्व का 24 घंटे के अंदर सबसे ज्यादा डाउनलोड किए जाने वाला एप बन गया है।

विज्ञान के चमत्कार चिकित्सा के क्षेत्र में –

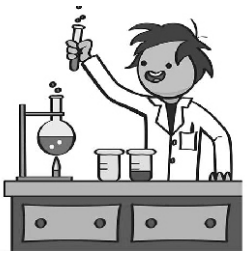

मनुष्य ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी बहुत से चमत्कार किए हैं। एक समय था जब छोटी–छोटी बीमारियाँ मनुष्य की मृत्यु का कारण बनती थी। परन्तु आज इंसान ने विज्ञान के माध्यम से इस क्षेत्र में बहुत अधिक सफलता प्राप्त की हैं। यदि पिछले कुछ वर्षो के चिकित्सा के क्षेत्र में नोबल पुरस्कारों की बात करें, तो हमें नए–नए विज्ञान के चमत्कार देखने को मिलते है।

15 अगस्त

जय राष्ट्र प्राण प्यारे, जय हिन्द के दुलारे,
स्वागत है आज तेरा, 15 अगस्त प्यारे–2
तू आन है हमारी, तू शान है हमारी,
बलिदान प्रेरणा तू, तू जान है हमारी,
निश्चिंत साँस लेते. हम सांझ और सकारे,
स्वागत है आज .....

ये रोज हर्ष से हम, हर वर्ष है मनाते,
करते हैं याद उनको, जो शीश है कटाते,
गांधी, सुभाष, बिस्मिल के स्वप्न हम संवारें,
स्वागत है आज.....

सौगन्ध ले रहे हैं, हम एक हो रहेंगे,
स्वाधीनता जननी की, जाने कभी न देंगे,
संकट रहित रहें हम, जन गीत ये पुकारे,
स्वागत है आज .....
जय राष्ट प्राण ..... ।

सन्यासी बड़ा या गृहस्थ

किसी नगर में एक राजा रहता था, उस नगर में जब कोई संन्यासी आता तो राजा उसे बुलाकर पूछता कि– "भगवान। गृहस्थ बड़ा है या संन्यास ?" अनेक साधु अनेक प्रकार से इसको उत्तर देते थे। कई संन्यासी को बड़ा तो बताते पर यदि वे अपना कथन सिद्ध न कर पाते तो राजा उन्हें गृहस्थ बनने की आज्ञा देता। जो गृहस्थ को उत्तम बताते उन्हें भी यही आज्ञा मिलती।

इस प्रकार होते–होते एक दिन एक संन्यासी उस नगर में आ निकला और राजा ने बुलाकर वही अपना पुराना प्रश्न पूछा। संन्यासी ने उत्तर दिया– "राजन। सच पूछें तो कोई आश्रम बड़ा नहीं है, किन्तु जो अपने नियत आश्रम को कठोर कर्तव्य धर्म की तरह पालता है वही बड़ा है।"

राजा ने कहा– "तो आप अपने कथन की सत्यता प्रमाणित कीजिये।"

संन्यासी ने राजा की यह बात स्वीकार कर ली और उसे साथ लेकर दूर देश की यात्रा को चल दिया।

घूमते–घूमते वे दोनों एक दूसरे बड़े राजा के नगर में पहुँचे, उस दिन वहाँ की राज कन्या का स्वयंवर था, उत्सव की बड़ी भारी धूम थी। कौतुक देखने के लिये वेष बदले हुए राजा और संन्यासी भी वहीं खड़े हो गये। जिस राजकन्या का स्वयंवर था, वह अत्यन्त रूपवती थी और उसके पिता के कोई अन्य सन्तान न होने के कारण उस राजा के बाद सम्पूर्ण राज्य भी उसके दामाद को ही मिलने वाला था।

राजकन्या सौंदर्य को चाहने वाली थी, इसलिये उसकी इच्छा थी कि मेरा पति, अतुल सौंदर्यवान हो, हजारों प्रतिष्ठित व्यक्ति और देश–देश के राजकुमार इस स्वयंवर में जमा हुए थे। राज–कन्या उस सभा मण्डली में अपनी सखी के साथ घूमने लगी। अनेक राजा–पुत्रों तथा अन्य लोगों को उसने देखा पर उसे कोई पसन्द न आया। वे राजकुमार जो बड़ी आशा से एकत्रित हुए थे, बिल्कुल हताश हो गये। अन्त में ऐसा जान पड़ने लगा कि मानो अब यह स्वयंवर बिना किसी निर्णय के अधूरा ही समाप्त हो जायगा।

इसी समय एक संन्यासी वहाँ आया, सूर्य के समान उज्ज्वल काँति उसके मुख पर दमक रही थी। उसे देखते ही राजकन्या ने उसके गले में माला डाल दी। परन्तु संन्यासी ने तत्क्षण ही वह माला गले से निकाल कर फेंक दी और कहा– "राजकन्ये। क्या तू नहीं देखती कि मैं संन्यासी हूँ? मुझे विवाह करके क्या करना है?"

यह सुन कर राजकन्या के पिता ने समझा कि यह संन्यासी कदाचित भिखारी होने के कारण, विवाह करने से डरता होगा, इसलिये उसने संन्यासी से कहा– "मेरी कन्या के साथ ही आधे राज्य के स्वामी तो आप अभी हो जायेंगे और पश्चात् सम्पूर्ण राज्य आपको ही मिलेगा।"

राजा के इस प्रकार कहते ही राजकन्या ने फिर वह माला उस साधु के गले में डाल दी, किन्तु संन्यासी ने फिर उसे निकाल पर फेंक दिया और बोला– "राजन् । विवाह करना मेरा धर्म नहीं है।"

ऐसा कह कर वह तत्काल वहाँ से चला गया, परन्तु उसे देखकर राजकन्या अत्यन्त मोहित हो गई थी, अतएव वह बोली "विवाह करूंगी तो उसी से करूंगी, नहीं तो मर जाऊँगी।" ऐसा कह कर वह उसके पीछे चलने लगी।

हमारे राजा साहब और संन्यासी यह सब हाल वहाँ खड़े हुए देख रहे थे। संन्यासी ने राजा से कहा– "राजन्। आओ, हम दोनों भी इनके पीछे चल कर देखें कि क्या परिणाम होता है।"

राजा तैयार हो गया और वे उन दोनों के पीछे थोड़े अन्तर पर चलने लगे। चलते–चलते वह संन्यासी बहुत दूर एक घोर जंगल में पहुँचा, उसके पीछे राजकन्या भी उसी जंगल में पहुँची, आगे चलकर वह संन्यासी बिल्कुल अदृश्य हो गया। बेचारी राजकन्या बड़ी दुखी हुई और घोर अरण्य में भयभीत होकर रोने लगी।

इतने में राजा और संन्यासी दोनों उसके पास पहुँच गये और उससे बोले– "राजकन्ये। डरो मत, इस जंगल में तेरी रक्षा करके हम तेरे पिता के पास तुझे कुशल पूर्वक पहुँचा देंगे। परन्तु अब अँधेरा होने लगा है, इसलिये पीछे लौटना भी ठीक नहीं, यह पास ही एक बड़ा वृक्ष है, इसके नीचे रात काट कर प्रातःकाल ही हम लोग चलेंगे।"

राजकन्या को उनका कथन उचित जान पड़ा और तीनों वृक्ष के नीचे रात बिताने लगे। उस वृक्ष के कोटर में पक्षियों का एक छोटा सा घोंसला था, उसमें वह पक्षी, उसकी मादी और तीन बच्चे थे, एक छोटा सा कुटुम्ब था। नर ने स्वाभाविक ही घोंसले से जरा बाहर सिर निकाल कर देखा तो उसे यह तीन अतिथि दिखाई दिये।

इसलिये वह गृहस्थाश्रमी पक्षी अपनी पत्नी से बोला– "प्रिये। देखो हमारे यहाँ तीन अतिथि आये हुए हैं, जाड़ा बहुत है और घर में आग भी नहीं है।" इतना कह कर वह पक्षी उड़ गया और एक जलती हुई लकड़ी का टुकड़ा कहीं से अपनी चोंच में उठा लाया और उन तीनों के आगे डाल दिया। उसे लेकर उन तीनों ने आग जलाई।

परन्तु उस पक्षी को इतने से ही सन्तोष न हुआ, वह फिर बोला "ये तो बेचारे दिनभर के भूखे जान पड़ते हैं, इनको खाने के लिये देने को हमारे घर में कुछ भी नहीं है। प्रिय, हम गृहस्थाश्रमी हैं और भूखे अतिथि को विमुख करना हमारा धर्म नहीं है, हमारे पास जो कुछ भी हो इन्हें देना चाहिये, मेरे पास तो सिर्फ मेरा देह है, यही मैं इन्हें अर्पण करता हूँ।"

इतना कह कर वह पक्षी जलती हुई आग में कूद पड़ा। यह देखकर उसकी स्त्री विचार करने लगी कि इस छोटे से पक्षी को खाकर इन तीनों की तृप्ति कैसे होगी? अपने पति का अनुकरण करके इनकी तृप्ति करना मेरा कर्तव्य है।' यह सोच कर वह भी आग में कूद पड़ी।

यह सब कार्य उस पक्षी के तीनों बच्चे देख रहे थे, वे भी अपने मन में विचार करने लगे कि "कदाचित अब भी हमारे इन अतिथियों की तृप्ति न हुई होगी, इसलिये अपने माँ बाप के पीछे इनका सत्कार हमको ही करना चाहिये।" यह कह कर वे तीनों भी आग में कूद पड़े।

यह सब हाल देख कर वे तीनों बड़े चकित हुए। सुबह होने पर वे सब जंगल से चल दिये। राजा और संन्यासी ने राजकन्या को उसके पिता के पास पहुँचाया।

इसके बाद संन्यासी राजा से बोला–"राजन् अपने कर्तव्य का पालन करने वाला चाहे जिस परिस्थिति में हो श्रेष्ठ ही समझना चाहिये। यदि गृहस्थाश्रम स्वीकार करने की तेरी इच्छा हो, तो उस पक्षी की तरह परोपकार के लिये तुझे तैयार रहना चाहिये और यदि संन्यासी होना चाहता हो, तो उस उस यति की तरह राज लक्ष्मी और रति को भी लज्जित करने वाली सुन्दरी तक की उपेक्षा करने के लिये तुझे तैयार होना चाहिये। कठोर कर्तव्य धर्म को पालन करते हुए दोनों ही बड़े हैं..!!''

स्वेदशी अपनाओ देश बचाओ

"स्वदेशी की भावना का अर्थ है हमारी वह भावना जो हमें दूर को छोड़कर अपने समीपवर्ती परिवेश का ही उपयोग और सेवा करना सिखाती है। उदाहरण के लिए इस परिभाषा के अनुसार धर्म के सम्बन्ध में यह कहा जायेगा कि मुझे अपने पूर्वजों से प्राप्त धर्म का पालना करना चाहिए। यदि मैं उसमें दोषी पाऊँ तो मुझे उन दोषों को दूर करके उस धर्म की सेवा करनी चाहिए। अर्थ के क्षेत्र में मुझे अपने पड़ोसियों द्वारा बनाई गई वस्तुओं का ही उपयोग करना चाहिए और उन उद्योगों की कमियाँ दूर करके उन्हें ज्यादा सम्पूर्ण और सक्षम बनाकर उनकी सेवा करनी चाहिए।"

"स्वदेशी से मेरा मतलब भारत के कारखानों में बनी वस्तुओं से नहीं है। स्वदेशी से मेरा मतलब भारत के बेरोजगार लोगों के हाथ की बनी वस्तुओं से है। शुरू में यदि इन वस्तुओं में कोई कमी भी रहती है तो भी हमें इन्हीं वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए तथा स्नेहपूर्वक उत्पादन करने वाले से उसमें सुधार करवाना चाहिए। ऐसा करने से बिना किसी प्रकार का समय और श्रम खर्च किए देश और देश के लोगों की सच्ची सेवा हो सकेगी।" महात्मा गाँधी।

- **स्वदेशी क्या -क्या है।**
- स्वदेशी वस्तु नहीं–चिन्तन है।
- स्वदेशी तन्त्र है– ऋषि जीवन का।
- स्वदेशी मन्त्र है– सुख शान्ति का।
- स्वदेशी शस्त्र है– युग क्रान्ति का।
- स्वदेशी समाधान है– बेरोजगारी का।
- स्वदेशी कवच है– शोषण से बचने का।
- स्वदेशी सम्मान है– श्रमशीलता का।
- स्वदेशी संरक्षक है– प्रकृति पर्यावरण का।
- स्वदेशी आन्दोलन है– सादगी का।
- स्वदेशी संग्राम है– जीवन मरण का।

स्वदेशी क्या है?

- जो अपने आसपास ही उत्पन्न और उपलब्ध हो जाए।

स्वदेशी क्यों?

- क्योंकि इसके बिना हमारा आर्थिक शोषण नहीं रुक सकेगा।

स्वदेशी कहाँ?

- जो कुछ हमें प्रकृति से उपलब्ध हो जाए वहाँ।

स्वदेशी कब?

- जब हमें सामाजिक सुख शान्ति की चाह हो तब।

स्वदेशी कितना?

- जिससे हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाए न कि इच्छाओं की उतना।

स्वदेशी कौन?

- जो हमारी चेतना में उपभोग नहीं उपयोग का भाव जागृत करें।

स्वदेशी कैसे?

- अपने आसपास के हस्त निर्मित वस्तुओं को उपयोग का संकल्प लेकर।
- स्वदेशी कब तक?

जीवन भर।

स्वदेशी में क्या - क्या?

भाषा, भूषा (पहनावा), भेषज (औषधियाँ), शिक्षा, रीति–रिवाज, भौतिक उपयोग की वस्तुएँ, कृषि, न्याय व्यवस्था आदि। स्वदेशी आग है– अनाचार को भस्म करने का।

स्वदेशी आधार है– समाज की सेवा का।

स्वदेशी उपचार है– मानवता के पतन का।,.

स्वदेशी उत्थान है– समाज व राष्ट्र का।

स्वदेशी से स्वावलम्बन :-

किसी भी देश को यदि आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, सुरक्षा आदि क्षेत्र में समर्थ व महाशक्ति बनना है, तो स्वदेशी मन्त्र को अपनाना ही होगा दूसरा कोई मार्ग नहीं। जैसेः—

अमेरिका-लम्बे समय तक अंग्रेजों का गुलाम रहा, 200 वर्ष पहले तक कोई अस्तित्व नहीं था। पर जब वहाँ स्वदेशी का मन्त्र सिखाने वाले जार्ज वाशिंगटन ने क्रांति किया तो आज अमेरिका विश्व में महाशक्ति बन बैठा है। दुनिया के बाजार में अमेरिका का 25 प्रतिशत सामान आज बिकता है।

जापान-तीन बार गुलाम हुआ पहले अंग्रेज, फिर डच पुर्तगाली स्पेनिश का मिला जुला, फिर तीसरी बार अमेरिका का गुलाम हुआ जिसने सन् 1945 में जापान के हिरोशिमा व नागासाकी में परमाणु बम गिरा दिये थे। 100 वर्ष पहले तक जापान का दुनिया में कोई पहचान नहीं था। लेकिन स्वदेशी के जज्बा के कारण जापान पिछले 60 वर्षों में पुनः खड़ा हो गया।

चीन-ये भी अंग्रेजों का गुलाम था। अंग्रेजों ने चीन के लोगों को अफीम के नशे में डूबो दिया था। सन् 1949 तक चीन भिखारी देश था। विदेशी कर्जा में डूबा था। बाद में वहाँ एक स्वदेशी के क्रान्तिकारी नेता माओजेजांग ने पूरे देश की तस्वीर ही बदल दी। आज चीन उस ऊँचे पायदान पर खड़ा है, जिससे अमेरिका भी घबराता है। आज दुनिया के बाजार में चीन का 25 प्रतिशत सामान बिकता है।

मलेशिया-25 वर्षों में खड़ा हो गया, स्वदेशी के कारण। विदेशी बैसाखियों पर कोई भी देश ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकता। अंग्रेजों के आने के पहले हमारा भारत हर क्षेत्र में विकसित व महाशक्ति था।

अंग्रेजों के शासन काल में टी.वी. मैकाले ने भारत की गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था को आमूलचूल बदल दिया। पढ़ाई जाने वाली इतिहास के किताबों में भारत की गौरवपूर्ण इतिहास में फेरबदल कर दिया गया। भारत को गरीबों का देश, सपेरों का देश, लुटेरों का देश, हर तरह से बदहाल देश दर्शाया गया। जबकि इंग्लैण्ड व स्कॉटलैण्ड के ही करीब 200 इतिहासकारों ने अपने इतिहास के किताबों में जो भारत का इतिहास लिखा है वह दूसरी ही कहानी कहता है। उसके अनुसार तो भारत सर्वसम्पन्न देश, ऋषियों का देश, हीरे जवाहरातों का देश था।

इतिहासकारों के अनुसार -

1. भारत के गांवों में जरूरत के सभी सामान तैयार होते थे, शहरों से केवल नमक आती थी।
2. सन् 1835 तक भारत का सामान दुनिया के बाजार में 33 प्रतिशत बिकता था।
3. भारत में तैयार लोहा दुनिया में सर्वश्रेष्ठ माना जाता था। संरगुजा (छ.ग.) के आसपास लोहे के 1000 कारखाने थे।
4. यूरोप के देशों की तुलना में भारत की फसल प्रति एकड़ तीन गुना ज्यादा होती थी।
5. गुरुकुल शिक्षा पद्धति बहुत मजबूत थी। वैदिक गणित के फार्मूलों से गणना कैलकुलेटर से भी शीघ्र हो जाती थी।
6. भारत के गाँवों में लोगों के घर में सोने के सिक्कों के ढेर पाए जाते थे, जिसे वे गिनकर नहीं तौलकर रखते थे।
7. गांवों में 36 तरह के उद्योग चलते थे।
8. गांवों में ही करीब 2000 प्रकार के प्राथमिक उत्पाद तैयार होते थे जिसे 18 प्रकार के कारीगर (जुलाहा, बुनकर, धुनकर, तेली, कुम्हार, बढ़ई आदि) तैयार करते थे।
9. हाईटेक उत्पाद रामझा जाने वाला स्टील भारत में 3000 व वर्षों तक बनता रहा है।
10. यहाँ का कपड़ा विदेशों में सोना के वजन के बराबर तौल में बिकता था।
11. यहाँ इतनी अधिक समृद्धि थी कि मन्दिर भी सोने के बनवा दिये गए।

मित्रों भारत का वैभव देखकर ही अंग्रेजों ने इसे "सोने की चिड़िया" कहा। पर एक सवाल उठता है कि इतना शक्तिशाली, सम्पन्न भारत की दुर्दशा कैसे हुए? इसका संक्षिप्त में जवाब यही है कि अंग्रेजों ने जान बूझकर अपने शासन काल में 3735 ऐसे कानून बना दिए जिससे हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूर्णतः ध्वस्त हो गई। वे सभी कानून आज भी चलते हैं कोई परिवर्तन नहीं है।

भारत को व्यवस्थित तरीके से लूटने का काम विदेशी कम्पनियों के द्वारा हुआ। जैसा कि आप जानते हैं ईस्ट इंडिया नामक कम्पनी भारत में व्यापार के बहाने आई थी। आज़ादी के पहले तक भारत को चूसने वाले 733 बहुराष्ट्रीय कम्पनियां सक्रिय थी। सत्ता हस्तान्तरण समझौते के तहत सिर्फ ईस्ट इंडिया कम्पनी को वापस भेजा गया बाकी 732 कम्पनियां बाद में भी बनी रहीं।

जिन विदेशी कम्पनियों ने भारत को खोखला बनाया और जिन विदेशी कम्पनियों के बहिष्कार के लिए स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों ने स्वदेशी आन्दोलन चलाते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, उन्हीं कम्पनियों को आज भारत सरकार आमन्त्रित करके स्वयं दलाली खाने में मस्त है। आज हमारे देश में ऐसे 5000 से भी अधिक बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपना सामान बेच रही है।

साहस में बड़ी शक्ति है

किसी गांव में एक नाई रहता था। वह बहुत आलसी था। सारा दिन वह आईने के सामने बैठा टूटे कंघे से बाल संवारते हुए गंवा देता उसकी बूढ़ी मां उसके आलसीपन के लिए दिन–रात फटकारती थी। लेकिन उसके कानों पर जूं भी नहीं रेंगती थी। आखिरकार एक दिन माँ ने गुस्से में उसकी पिटाई कर दी। जवान बेटे ने खुद को बहुत अपमानित महसूस किया और घर छोड़ कर चला गया। उसने कसम खाई कि जब तक कुछ धन जमा नहीं कर लेगा, वह घर नहीं लौटेगा। चलते–चलते वह जंगल पहुंचा। उसे कोई काम तो आता नहीं था। इसलिए अब वो भगवान को मनाने बैठ गया। अभी वह प्रार्थना के लिए बैठता, उससे पहले ही उसका एक ब्रह्मराक्षस से सामना हो गया। ब्रह्मराक्षस नाई को देखकर खुश हुआ और खुशी मनाने के लिए लिए नाचने लगा। यह देख नाई के होश उड़ गए, पर अपने डर को जाहिर नहीं होने दिया। उसने साहस बटोरा और राक्षस के साथ नाचने लगा।

कुछ देर बाद उसने राक्षस से पूछा–तुम क्यों नाच रहे हो? तुम्हें किस बात की खुशी है? राक्षस हंसते हुए बोला, मैं तुम्हारे सवाल का इंतज़ार कर रहा था। तुम तो निरे उल्लू हो। तुम समझ नहीं पाओगे। मैं इसलिए नाच रहा हूं कि मुझे तुम्हारा नरम नरम मौस खाने को मिलेगा। वैसे, तुम क्यों नाच रहे हो? नाई ने ठहाका लगाते हुए कहा, मेरे पास इससे भी बढ़िया कारण है। हमारा राजकुमार सख्त बीमार है। चिकित्सकों ने उसे एक सौ एक ब्रम्हराक्षसों के हृदय का रक्त पीने का उपचार बताया है। महाराज ने मुनादी करवाई है जो कोई यह दवा लाकर देगा, उसे वे अपना आधा राज्य देंगे और राजकुमारी का विवाह भी उससे कर देंगे। मैंने सौ ब्रम्हराक्षस तो पकड़ लिए हैं। अब तुम भी मेरी गिरफ्त में हो। यह कहते हुए उसने जेब से छोटा आईना उसकी आंखों के सामने किया। आतंकित राक्षस ने आईने में अपनी शक्ल देखी। चांदनी रात में उसे अपना प्रतिबिम्ब साफ नज़र आया। उसे लगा कि वह वाकई उसकी मुट्ठी में है। थर–थर कांपते हुए उसने नाई से विनती की कि उसे छोड़ दे, पर नाई राज़ी नहीं हुआ। तब राक्षस ने उसे सात रियासतों के खज़ाने के बराबर धन देने का लालच दिया। पर इस भेंट में नाई ने दिलचस्पी न लेने का नाटक करते हुए कहा–पर जिस धन का तुम वादा कर रहे हो, वह है कहां और इतनी रात में उस धन को और मुझे घर कौन पहुंचाएगा?

राक्षस ने कहा, खज़ाना तुम्हारे पीछे वाले पेड़ के नीचे गड़ा है। पहले तुम इसे अपनी आंखों से देख लो, फिर मैं तुम्हें और इस खज़ाने को पलक झपकाते ही तुम्हारे घर पहुंचा दूंगा। राक्षसों की शक्तियां तुमसे क्या छुपी है, कहने के साथ ही उसने पेड़ को जड़ समेत उखाड़ दिया और हीरे–मोतियों से भरे सोने के सात कलश बाहर निकाले। खज़ाने की चमक से नाई की आंखें चौंधियां गईं, पर अपनी भावनाओं को छुपाते हुए उसने रौब से उसे आदेश कि वह उसे और खज़ाने को उसके घर पहुंचा दे। राक्षस ने आदेश का पालन किया। राक्षस ने अपनी मुक्ति की याचना की, पर नाई उसकी सेवाओं से हाथ नहीं धोना चाहता था। इसलिए अगला काम फसल काटने का दे दिया। बेचारे राक्षस को यकीन था कि वह नाई के शिकंजे में है। सो उसे फसल तो काटनी ही पड़ेगी।

वह फसल काट ही रहा था कि वहां से दूसरा ब्रम्हराक्षस गुजरा। अपने दोस्त को इस हालत में देख

वह पूछ बैठा। ब्रम्हराक्षस ने उसे आपबीती बताई और कहा कि, इसके अलावा कोई चारा नहीं है। दूसरे ने हंसते हुए कहा, पागल हो गए हो? राक्षस आदमी से कहीं शक्तिशाली और श्रेष्ठ होते हैं। तुम उस आदमी का घर मुझे दिखा सकते हो? हाँ, दिखा दूंगा, पर दूर से। धान की कटाई पूरी किए बिना उसके पास जाने की मेरी हिम्मत नहीं है। यह कहकर उसने उसे नाई का घर दूर से दिखा दिया।

वहीं अपनी कामयाबी के लिए नाई ने भोज का आयोजन किया और एक बड़ी मछली भी लेकर आया। लेकिन एक बिल्ली टूटी खिड़की से रसोई में आकर ज्यादा मछली खा गई। गुस्से में नाई की बीवी बिल्ली को मारने के लिए झपटी, पर बिल्ली भाग गई। उसने सोचा, बिल्ली इसी रास्ते से वापस आएगी। सो वह मछली काटने की छुरी थामे खिड़की के पास खड़ी हो गई। उधर दूसरा राक्षस दबे पांव नाई के घर की ओर बढ़ा। उसी टूटी हुई खिड़की से वह घुसा। बिल्ली की ताक में खड़ी नाइन ने तेज़ी से चाकू का वार किया। निशाना सही नहीं बैठा, पर राक्षस की लम्बी नाक आगे से कट गई। दर्द से कराहते हुए वह भाग खड़ा हुआ। और शर्म के मारे अपने दोस्त के पास वो गया भी नहीं।

पहले राक्षस ने धीरज के साथ पूरी फसल काटी और अपनी मुक्ति के लिए नाई के पास गया। धूर्त नाई ने इस बार उल्टा शीशा दिखाया। राक्षस ने बड़े गौर से देखा। उसमे अपनी छवि न पाकर उसने राहत की सांस ली और नाचता–गुनगुनाता चला गया।

भारत के लिए प्रसिद्ध है

मातृ प्रेम	–	भारत का
प्रतिज्ञा	–	भीष्म की
दान	–	कर्ण का
एकाग्रता	–	अर्जुन की
वीरता	–	अभिमन्यु की
गुरु भक्ति	–	एकलव्य की
सत्यता	–	हरिश्चन्द्र की
न्याय	–	विक्रमादित्य का
सौभाग्य	–	सावित्री का
तप	–	ध्रुव का
वरदान	–	इन्द्र का

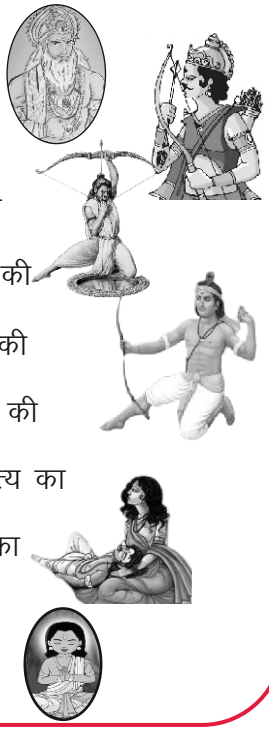

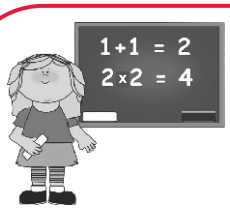

जीवन का गणित

सूझ–बूझ से गणित को सरल बनाना पड़ता है।
कभी जोड़ना पड़ता है तो कभी घटाना पड़ता है।
गुणाकार और भागाकार खूब किया जाता है।
मगर जीवन का शेष, अंत में शून्य ही आता है।

जीवन एक वृत्त है, और खुशी उसका केंद्र बिन्दु
जीवन को बड़ा बनाने के लिए खूब पैसा कमाते है।
स्वास्थ्य की परवाह किये बिना जी जान लगाते हैं।
हकीकत में हम खुशियों से बहुत दूर हो जाते हैं।

जीवन रूपी गणित के समस्या रूपी सवाल
हर किसी की जिन्दगी में आते हैं.
इन समस्याओं से हम भाग नहीं पाते हैं।
थोड़ी कोशिश करने पर इसका हल पाते हैं ।।

सर्वपल्ली राधाकृष्णन

-देवेन्द्रनाथ तिवारी
पूर्व प्रधानाचार्य

डॉ. राधाकृष्णन का जन्म तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेन्सी के चितूर जिले के तिरुतनी ग्राम के एक तेलुगुभाषी ब्राह्मण परिवार में 5 सितम्बर 1888 को हुआ था। तिरुतनी ग्राम चेन्नई से लगभग 84 कि. मी. की दूरी पर स्थित है और 1960 तक आंध्र प्रदेश में था और वर्तमान में तमिलनाडु के तिरुवल्लुर जिले में पड़ता है। एक निर्धन किन्तु विद्वान ब्राह्मण की सन्तान थे। उनके पिता का नाम 'सर्वपल्ली वीरासमियाह और माता का नाम 'सीताम्मा था। उनके पिता राजस्व विभाग में काम करते थे। उन पर बहुत बड़े परिवार के भरण–पोषण का दायित्व था। वीरास्वामी के पाँच पुत्र तथा एक पुत्री थी। राधाकृष्णन अपने पिता की दूसरी संतान थे।

यद्यपि उनके पिता पुराने विचारों के थे और उनमें धार्मिक भावनाएँ भी थीं, इसके बावजूद उन्होंने राधाकृष्णन को क्रिश्चियन मिशनरी संस्था लुथर्न मिशन स्कूल, तिरुपति में विद्याध्ययन के लिये भेजा। फिर अगले 4 वर्ष (1900 से 1904) की उनकी शिक्षा वेल्लूर में हुई। इसके बाद उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, मद्रास में शिक्षा प्राप्त की। वह बचपन से ही मेधावी थे।

इस उम्र में उन्होंने स्वामी विवेकानन्द और अन्य महान विचारकों का अध्ययन किया। उन्होंने 1902 में मैट्रिक स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की और उन्हें छात्रवृत्ति भी प्राप्त हुई। इसके बाद उन्होंने 1905 में कला संकाय परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उन्हें मनोविज्ञान, इतिहास और गणित विषय में विशेष योग्यता उच्च प्राप्तांकों के साथ मिली। इसके अलावा क्रिश्चियन कॉलेज, मद्रास ने उन्हें छात्रवृत्ति भी दी। दर्शनशास्त्र में एम०ए० करने के पश्चात् 1918 में वे मैसुर महाविद्यालय में दर्शनशास्त्र के सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुए। बाद में उसी कॉलेज में वे प्राध्यापक भी रहे। डॉ. राधाकृष्णन ने अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से विश्व को भारतीय दर्शन शास्त्र से परिचित कराया। सारे विश्व में उनके लेखों की प्रशंसा की गयी।

राधाकृष्णन का भी विवाह 'सिवाकाम' नामक कन्या के साथ सम्पन्न हुआ। यद्यपि उनकी पत्नी सिवाकाम् ने परम्परागत रूप से शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, लेकिन उनका तेलुगु भाषा पर अच्छा अधिकार था। वह अंग्रेजी भाषा भी लिख–पढ़ सकती थीं। राधाकृष्णन दम्पति को सन्तान के रूप में पुत्री की प्राप्ति हुई जिनका नाम उन्होंने सुमित्रा रखा। स्नातकोतर परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली।

शिक्षा का प्रभाव जहाँ प्रत्येक व्यक्ति पर निश्चित रूप से पड़ता है, यही कारण है कि क्रिश्चियन संस्थाओं में अध्ययन करते हुए राधाकृष्णन के जीवन में उच्च गुण समाहित हो गये। लेकिन उनमें एक अन्य परिवर्तन भी आया जो कि क्रिश्चियन संस्थाओं के कारण ही था। कुछ लोग हिन्दुत्ववादी विचारों को हेय दृष्टि से देखते थे और उनकी आलोचना करते थे। उनकी आलोचना को डॉ. राधाकृष्णन ने चुनौती की तरह लिया और हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन करना आरम्भ कर दिया। इस कारण राधाकृष्णन ने तुलनात्मक रूप से यह जान लिया कि भारतीय आध्यात्म काफ़ी समृद्ध है और क्रिश्चियन मिशनरियों द्वारा हिन्दुत्व की आलोचनाएँ निराधार हैं। इससे इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संस्कृति धर्म, ज्ञान और सत्य पर आधारित है जो प्राणी को जीवन का सच्चा सन्देश देती है।

डॉ. राधाकृष्णन ने यह भली भाँति जान लिया था कि जीवन में व्यक्ति को सुख– दुख में समभाव से रहना चाहिये। वस्तुतः मृत्यु एक अटल सच्चाई है, जो अमीर गरीब सभी को अपना ग्रास बनाती है तथा किसी प्रकार का वर्ग भेद नहीं करती। सच्चा ज्ञान वही है जो आपके अन्दर के अज्ञान को समाप्त कर सकता है। वस्तुतः इसी कारण डॉ. राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों को समझ पाने में सफल रहे, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने यह भी जाना कि भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों का आदर करना सिखाया गया है और सभी धर्मों के लिये समता का भाव भी हिन्दू संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान को समझा और उसके काफी नज़दीक हो गये।

1909 में 21 वर्ष की उम्र में डॉ. राधाकृष्णन ने मद्रास प्रेसिडेंसी कॉलेज में कनिष्ठ व्याख्याता के तौर पर दर्शन शास्त्र पढ़ाना प्रारम्भ किया। यह उनका परम सौभाग्य था कि उनको अपनी प्रकृति के अनुकूल आजीविका प्राप्त हुई थी। यहाँ उन्होंने 7 वर्ष तक न केवल अध्यापन कार्य किया अपितु स्वयं भी भारतीय दर्शन और भारतीय धर्म का गहराई से अध्ययन किया। उन दिनों व्याख्याता के लिये यह आवश्यक था कि अध्यापन हेतु वह शिक्षण का प्रशिक्षण भी प्राप्त करे। इसी कारण 1910 में राधाकृष्णन ने शिक्षण का प्रशिक्षण मद्रास में लेना आरम्भ कर दिया। इस समय इनका वेतन मात्र 37 रुपये था।

जब डॉ. राधाकृष्णन यूरोप एवं अमेरिका प्रवास से पुनः भारत लौटे तो यहाँ के विभिन्न विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद उपाधियाँ प्रदान कर उनकी विद्वत्ता का सम्मान किया। 1928 की शीत ऋतु में इनकी प्रथम मुलाक़ात पण्डित जवाहर लाल नेहरू से उस समय हुई, जब वह कांग्रेस पार्टी के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिये कलकता आए हुए थे। यद्यपि सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय शैक्षिक सेवा के सदस्य होने के कारण किसी भी राजनीतिक संभाषण में हिस्सेदारी नहीं कर सकते थे, तथापि उन्होंने इस की कोई परवाह नहीं की और भाषण दिया। 1929 में इन्हें व्याख्यान देने हेतु 'मानचेस्टर विश्वविद्यालय' द्वारा आमन्त्रित किया गया। इन्होंने मानचेस्टर एवं लन्दन में कई व्याख्यान दिये।

स्वतन्त्रता के बाद संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य बनाया गया। वे 1947 से 1949 तक इसके सदस्य रहे। इसी समय वे कई विश्वविद्यालयों के चेयरमैन भी नियुक्त किये गये। 1952 में डॉक्टर राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति निर्वाचित किये गये। संविधान के अंतर्गत उपराष्ट्रपति का नया पद सृजित किया गया था। नेहरू जी ने इस पद हेतु राधाकृष्णन का चयन करके पुनः लोगों को चौंका दिया। उन्हें आश्चर्य था कि इस पद के लिए कांग्रेस पार्टी के किसी राजनीतिज्ञ का चुनाव क्यों नहीं किया गया। उपराष्ट्रपति के रूप में राधाकृष्णन ने राज्यसभा में अध्यक्ष का पदभार भी सम्भाला।

हमारे देश के द्वितीय किंतु अद्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रतिवर्ष 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन समस्त देश में भारत सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षकों को पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 1931 में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा "सर" की उपाधि प्रदान की गयी थी। जब वे उपराष्ट्रपति बन गये तो स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने 1954 में उन्हें उनकी महान दार्शनिक व शैक्षिक उपलब्धियों के लिये देश का सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न प्रदान भारत किया। ऐसे प्रख्यात शिक्षाविद्महान दार्शिनिक भारतीय संस्कृति के संवाहक, और आस्थावान विचारक डॉ० सर्वपल्ली राधा कृष्णन के जन्म दिवस 5 सितम्बर के अवसर पर शत् शत् नमन्।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय : एक विलक्षण व्यक्तित्व

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म, उनके ननिहाल 'नगला चन्द्रभान' (मथुरा) नामक गाँव में 25 सितम्बर सन् 1916 को हुआ था। पिता भगवती प्रसाद और माता रामप्यारी की संतान के रूप में पंडित जी का जन्म समय के उस कालखंड मे हुआ था। जिस समय भारतीय जनमानस गहन अंधकार में डूबा हुआ था।

दीनदयाल जी का जीवन प्रारम्भ से ही अनेकों विषमताओं से घिरा रहा। व्यक्तिगत जीवन में बाल्यकाल से ही अनेक झंझावातों को सहन करते करते नियति के द्वारा उन्हें धैर्य, संयम और विवेक की शिक्षा मिली। निरहंकारी और प्रेरक व्यक्तित्व के स्वामी पंडित जी भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतिनिधि थे। वे मूलतः राजनेता नहीं थे, किन्तु तत्कालीन समय में राष्ट्र की आवश्यकता के नाते उन्होंने राजनीति अपनाई। उनकी दृष्टि स्वतंत्रता के बाद के कालखंड मे समाज की पुनर्रचना करने के महत्वपूर्ण कार्य की ओर थी। लगभग एक हजार वर्षों की दासत की लम्बी शृंखला के कारण छिन्न–भिन्न हुए भारतीय समाज को उसके अपने सभी मूल्यों व आत्म गौरव के साथ फिर से खड़ा करने का प्रचंड दायित्व दीनदयाल जी ने उठाया था।

विलक्षण प्रतिभा के धनी अद्वितीय मेधा से संपन्न दिव्य गुणों से परिपूर्ण पंडित जी का व्यक्तित्व एक ऐसा प्रेरणा पुंज है जिसके आलोक में हम भारतीयों को अपने देश के आर्थिक राजनैतिक और नैतिक आध्यात्मिक विकास का भी मॉडल तैयार करना होगा। उन्होंने भारत के विकास के लिए जगत गुरु शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन पर आधारित "एकात्म मानववाद" के विचार को अपनाने की बात कही। वे जानते थे विभिन्नताओं व अनेकताओं से परिपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए हमें अपनी सनातन संस्कृति के मूल में जाकर एकात्मता के सूत्र तलाशने होंगें। जब हम एकात्म भाव से सभी को देखेंगे तो केवल अपना चिंतन नहीं करेंगे बल्कि सभी के कल्याण का भाव रखेंगे और आत्मोत्थान के साथ– साथ राष्ट्रोथान को दिशा देने में सहायक होंगे। यही है हमारी सांस्कृतिक पहचान जिसके दर्शन हमें पं. दीनदयाल जी के व्यक्तित्व में होते हैं। उन्होंने 'राष्ट्रधर्म' प्रकाशन की स्थापना की तथा इसी नाम से पत्रिका भी निकाली, इसके अतिरिक्त 'पांचजन्य' के संपादन का कार्य भी किया।

समय समय पर अनेक पत्र पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित हुए जिनमें राष्ट्र की तत्कलीन समस्याओं के प्रति उनका दृष्टिकोण प्रकट होता था। उनके भाषणों का भी एक संग्रह 'राष्ट्रचिंतन' नाम से प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में 'अर्थायाम' व 'अर्थमिति' का अध्ययन करके उनकी विचारधारा को समझा जा सकता है। जिसमें उन्होंने अर्थव्यवस्था और बैंकिंग का जो आदर्श स्वरूप बताया था, ठीक वैसा ही अर्थतन्त्र खड़ा करके जापान जैसा छोटा सा देश विश्व के विकसित देशों में अपनी गणना करवायी, जबकि भारत प्रत्येक दृष्टि से जापान से कहीं अधिक साधन सम्पन्न रहा है। किन्तु एक युग दृष्टा की दृष्टि को न पहचान सकने के कारण आर्थिक और वैचारिक विपन्नता झेलने को विवश रहा। पं दीनदयाल जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र देवता के चरणों में समर्पित कर दिया था। एक महान विचारक, चिंतक, लेखक, संपादक, पत्रकार, दार्शनिक, मूर्धन्य विद्वान और भारतीय राजनीति के आकाश के एक ऐसे नक्षत्र थे, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से तिमिरान्धकार को भेदकर प्रकाश की किरणें बिखेरी, किन्तु दुर्भाग्य से 52 वर्ष की अत्यंत कम आयु में ही 11 फरवरी 1968 को वह सूर्य असमय अस्त हो गया, ज्योति तो विलीन हो गयी किन्तु उनकी ज्योतिर्मय आभा सदा रहेगी और राष्ट्र सेवियों का पथ आलोकित करती रहेगी। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व को आज हम कोटि कोटि नमन करते हैं।

भारहीनता (Weightlessness) का प्रयोग

आवश्यक सामग्री– अनेक छिद्रयुक्त एक लीटर की खाली बोतल, एक खाली बाल्टी या टब (ताकि पानी का प्रवाह फर्श पर न गिरे, वह बाल्टी में ही जाए)

ऐसा करो –

1. बोतल को पानी से भरें।
2. हाथ से बोतल को ऊँचाई पर उठाकर रखो एवं ऊपरी हिस्से को दबाओ और पानी की धार को बाल्टी में जाने दो।
3. देखो कि पानी की धार कैसे बहती है, जब बोतल नीचे गिरती है?

(2)

आप देखते हैं कि –जब स्वतंत्र रूप से बोतल पृथ्वी की ओर गिरती है तो छिद्रों से पानी का प्रवाह रुक जाता है। यदि बोतल को हाथ से पुनः पकड़ लिया जाए तो पानी की धार छिद्रों से बहना शुरू हो जाता है।

वैज्ञानिक कारण –

1. भारहीनता के कारण
2. स्वतंत्र रूप से गिरते समय वस्तु भारहीन हो जाती है।

(3)

दैनिक जीवन में अनुप्रयोग एवं अन्य प्रयोगों द्वारा साक्ष्य प्रदर्शन –

अपने पैर के नीचे एक वजन मापने वाली मशीन को बाँधकर यदि एक निश्चित ऊँचाई से कूदें तो हम देखेंगे कि मशीन का सूचक निशान शून्य पर ही रहता है। अर्थात् हमारा भार शून्य रहता है, जब हम हवा में स्वतंत्र रूप से कूद रहे थे। अतः अंतरिक्ष में हमारा भार शून्य होने से हमें भारहीनता का अनुभव होता है।

गतिविधियाँ

शिव-पार्वती झाँकी

आज दिनांक 8–08–24 बहुस्पतिवार को रामानुज दयाल अग्रवाल सरस्वती शिशु मन्दिर रामपुर बाग, बरेली के शिशुओं ने धोपेश्वर नाथ मन्दिर में शिव व पार्वती के स्वरूप में जाकर मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किये। शिव व पार्वती स्वरूप में सजने वाले शिशुओं की कार्यक्रम में उपस्थित समस्त शिव भक्तों भूरि–भूरि प्रशंसा की। विद्यालय के व्यवस्थापक श्रीमान ब्रजवासी लाल अग्रवाल जी व प्रधानाचार्य श्रीमान राजेश कुमार त्रिपाठी जी ने व सभी विद्यालय परिवार ने शिशुओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए शिव व पार्वती जी से मंगलमय शुभ कामनाओं के लिए प्रार्थना की।

हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया नाग पंचमी का पर्व

पिहानी के सरस्वती शिशु मंदिर में नाग पंचमी पर्व पर नाग देवता की पूजा–अर्चना की गई। भैय्या, बहनों द्वारा श्यामपट पर नाग देवता का चित्र बनाकर पूजा–अर्चना किया गया। इस दौरान बच्चों ने गुड़िया भी पीटी इस अवसर पर विद्यालय के कार्यालय प्रभारी व वरिष्ठ आचार्य समीर बाजपेई ने कहा कि नाग पूजा के साथ–साथ हम समय पालन कर विद्यालय का परीक्षा परिणाम भी अच्छा लाने का प्रयास करेंगे। नाग पंचमी पर्व का महत्व बताते हुए कहा कि हम भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के अनुयायी है। भारत देश देवी–देवताओं के साथ–साथ जीवनरक्षक एवं हमारे धरोहर को बचाने वाले पशु–पक्षी जीव–जंतु को भी पूजा जाता है। विद्यालय प्रधानाचार्या बिंदु सिंह ने श्रावण मास का महत्व बताते हुए नाग देवता से संबंधित कथा–कहानी सुनाई। कहा कि हमारी प्राचीन संस्कृति की एक धरोहर है, जो आज आधुनिक एवं वैज्ञानिक दुनिया अपनी पहचान खोती जा रही है। इसको बचा–रखना हमारा कर्तव्य है।

नाग पंचमी के दिन कपड़े में रुई भरकर गुड़िया बनाई जाती है, फिर सभी बच्चे एक घेरे में खड़े हो जाते हैं और लड़कियां अपनी गुड़ियां को उस घेरे के अंदर रख देती हैं, बाद में लड़के डंडे से गुड़ियों को पीटते हैं और पीटने के बाद उन गुड़ियों का विसर्जन किया जाता है। यह परंपरा भाई–बहन के प्यार और न्याय का भी प्रतीक है।

पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से पौधे रोपण कार्यक्रम

सरस्वती शिशु मन्दिर हरतोला जिला–नैनीताल उत्तराखण्ड–पर्यावरण का संदेश देने वाला उत्तराखण्ड का लोकपर्व ''हरेला'' धूमधाम से मनाया गया। हरियाली के उत्सव में धरा को हरा–भरा रखने के लिए और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेकर लोग आगे आयें, बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी ने वातावरण के अनुकूल रखने के लिए पौधे रोपित किये, प्रधानाचार्य गंगा सिंह बिष्ट ने कहा कि पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए व्यक्ति को जीवन में 30 पौधे लगाने चाहिए और एक पौधा माँ के नाम, उनका संरक्षण भी करना चाहिए, के साथ–साथ अमरूद, नीम, जामुन, तुलसी, अखरोट आदि समेत 20 पौधे लगाये, एक श्रेष्ठ समाज ने विद्यालय में पौधे रोपे।

छात्र संसद शपथ ग्रहण समारोह

प्रो0 राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) शिक्षा प्रसार समिति द्वारा संचालित ज्वाला देवी सरस्वती विद्यामन्दिर इण्टर कॉलेज गंगापुरी, रसूलाबाद,

प्रयागराज में बुधवार दिनांक 07.08.2024 को छात्र संसद शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीपार्चन, पुष्पार्चन एवं सरस्वती वन्दना के साथ हुआ तत्पश्चात विद्यालय के प्रधानाचार्य युगल किशोर मिश्र द्वारा आये हुए अतिथियों का परिचय कराते हुए सम्मान कराया गया। कार्यक्रम की प्रस्ताविकी छात्र संसद प्रमुख आचार्य जनार्दन प्रसाद दुबे द्वारा रखी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान रविशंकर द्विवेदी (डी.पी.आर.ओ. प्रयागराज) तथा कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में श्री निर्मल कुमार द्विवेदी (अवकाश प्राप्त आर. टी.ओ.) उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मा. मुख्य अतिथि द्वारा किशोर भारती, कन्या भारती एवं शिशु भारती के प्रधानमंत्री, अध्यक्ष, उपप्रधानमंत्री, उपाध्यक्ष, सेनापति एवं उपसेनापति को शपथ दिलायी गयी तदनन्तर अन्य विभागों के मंत्रियो को विधि पूर्वक शपथ ग्रहण करायी गयी। भैया यश स्वरूप विद्यालय किशोर भारती तथा बहन पलक कुशवाहा कन्या भारती की प्रधानमंत्री एवं भैया दिव्यांश मिश्र शिशु भारती अध्यक्ष चुने गये। भैया सुमित दुबे तथा बहन इंद्राणी सिंह उपप्रधानमंत्री एवं भैया शिवा उपाध्यक्ष चुने गये जबकि भैया अंश मिश्रा एवं बहन सिद्धिका त्रिपाठी को सेनापति तथा रिद्धि दुबे को मंत्री चुना गया। विद्यालय में छात्रसंघ की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए मा. मुख्य अतिथि जी ने कहा कि ''विद्या भारती के विद्यालयों में छात्र संसद का गठन किया जाना छात्रों के सर्वागींण विकास की परिकल्पना का एक अभिन्न अंग है। हम सब की यह सोच रहती है कि हमारे छात्र शैक्षिक विकास के साथ–साथ राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं क्रियात्मक रूप से इतने योग्य बने कि विद्यालय से निकलने के बाद वे देश व समाज को नई दिशा दे सकें। छात्र संसद के माध्यम से विद्यार्थी में उत्तरदायित्व स्वीकार करने की क्षमता आती है तथा वह विद्यालय के अनुशासन, बौद्धिक क्रियाकलाप व खेलकूद की गतिविधियों में सहायक सिद्ध होता है जिससे छात्र का स्वयं विकास तो होता ही है विद्याालय की प्रत्येक गतिविधियॉ छात्र के माध्यम से ही सुचारू रूप से संचालित होती हैं। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री निर्मल कुमार द्विवेदी ने कहा–आज विद्या भारती द्वारा गठित छात्र संसद के इस अभिनव स्वरूप को देखकर मै यह निश्चित रूप से यह कह सकता हूँ कि हमारे ये नौनिहाल विद्यालय के साथ–साथ समूचें देश की भी बागडोर सभालनें में सक्षम हैं''। आभार ज्ञापन विद्यालय की आचार्या बेबिका राय द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में राकेश कुमार यादव, राजकमल, राजेन्द्र मोहन ओझा, सोमेन्द्र सिंह, संजय पाल, रीता विश्वकर्मा के अतिरिक्त छात्र/ छात्रा एवं आचार्यगण उपस्थित रहे।कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की बहन फिजा खान एवं ऋषिका ने किया।

कांवर यात्रा

आज दिनांक 10–08–2024 शनिवार को सरस्वती शिशु मन्दिर पिहानी हरदोई नन्हे मुन्ने भैया द्वारा कांवर यात्रा विद्यालय से श्री भूतेश्वर महादेव मंदिर पिहानी तक निकाली गई जिसमें प्रबंध समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री ब्रजेश गुप्ता जी, श्री रामदास कटियार जी, श्री नवनीत बाजपेई जी, हरियावा चीनी मिल के उपजाऊ मिट्टी परियोजना के प्रोजेक्ट अधिकारी श्री अभिनेश कुमार सिंह जी अजवापुर चीनी मिल के उपजाऊ मिट्टी परियोजना के प्रोजेक्ट अधिकारी श्री अभिषेक श्रीवास्तव जी, विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य श्री अवनीश सिंह जी, शिशु मन्दिर की प्रधानाचार्य श्रीमती बिन्दु सिंह जी एवम समस्त आचार्य बंधु भगिनी उपस्थित रहे।

श्री गुरु पूजन उत्सव सम्पन्न

सरस्वती शिशु मन्दिर हरतोला में श्री ''गुरु पूजन उत्सव'' कार्यक्रम दिनांक अगस्त 2024 दिन

शनिवार को सम्पन्न हुआ, जिसमें कार्यक्रम/उत्सव के अध्यक्ष उवदित्त, दत्त जी ने द्वीप प्रज्जवलित कर कार्य का शुभारम्भ किया, मुख्य वक्ता मा0 देवकी जी ने संघ की स्थापना, संस्थापक, गुरु जी एवं अर्पण धन राशि पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में मोहन भट्ट जी सहित 29 स्वयं सेवकों तरुण, बाल स्वाति ने भाग लिया। मुख्य शिक्षक गंगा सिंह बिण्ट जी ने कार्यक्रम की सफलता के लिए भैरव जी, कार्यकर्त्ताओं को प्रफुल्लित एवं एक स्वयंसेवक निश्वार्थ भाव से जिज्ञासु प्रवृति का होना, स्वयंसेवक की मूल विशेषता के साथ संघ कार्यक्रम विकिर किया गया।

संस्कृति बोध परियोजना अभियान

पूर्व निर्धारित सूचना के आधार पर सील कोचिंग सेंटर हरदोई में बैठक प्रारंभ हुई। जिसमें प्रमुख रूप से श्रीमान राकेश कुमार जी प्रांतीय संस्कृति बोध परियोजना प्रमुख पूर्णकालिक (समयदानी) उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमान शूलपाणी जी सह जिलामंत्री जन शिक्षा परिषद हरदोई ने की। कुल 25 बंधु सभी 05 संकुलों से उपस्थित रहे। वहाँ पर जिला टोली, संकुल टोली, विद्यालय टोली की चर्चा की गई।

विद्यालय टोली में 10 सदस्य, संकुल टोली में 15 सदस्य और जिला टोली में 31 सदस्यों का चयन हुआ जिनकी घोषणा की गई। यह समिति संपूर्ण जनपद में अभियान चलाकर राष्ट्रीय भाव, नैतिक पक्ष व संस्कार पक्ष प्रबल कैसे हो, इस दृष्टि से समाज में शिशु मंदिर विद्यालय, अन्य विद्यालय, प्रबंध समिति पूर्व छात्र, सामाजिक बंधु, अभिभावक, कार्यकर्ता, विद्वत परिषद आदि बंधु इसमें सहयोग करेंगे।

दिनांक 5 अगस्त 2024 दिन सोमवार को प्रत्येक विद्यालय में इसका उद्घाटन होगा। अंत में जन शिक्षा परिषद हरदोई के जिला प्रमुख श्रीमान देवेंद्र पाल सिंह जी द्वारा आभार प्रकट किया गया।

अतिथियों का परिचय श्रीमान ब्रह्मचारी जी प्रधानाचार्य सरस्वती विद्या मंदिर बिलग्राम के द्वारा कराया गया। जिला अभियान प्रमुख श्रीमान विमल जी के द्वारा कार्यक्रम का सम्पूर्ण वृत्त रखा गया। अंत में सह जिलामंत्री श्रीमान शूलपाणी जी सभी को आशीर्वचन दिया। मंगलमंत्र के साथ बैठक का समापन हुआ।

मातृ प्रशिक्षण वर्ग

आज दिनांक 12 अगस्त 2024 को सरस्वती शिशु मंदिर, इन्दिरा नगर, लखनऊ में "मातृ प्रशिक्षण वर्ग" संपन्न हुआ जिसमें माताओं और बहनों को बाल विकास से संबंधित जानकारी दी गई तथा अंग्रेजी शिक्षण का प्रशिक्षण श्रीमती निमिषा श्रीवास्तव द्वारा दिया गया। इसमें मुख्य अतिथि श्री मदन मोहन गुप्त जी प्रबंधक तथा श्री गोपाल राम मिश्र प्रधानाचार्य की गरिमामयी उपस्थिति रही।

स्वतन्त्रता दिवस

आज दिनांक 15.8–2024 को सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज इन्दिरा नगर, लखनऊ में 78 वें स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर विद्यालय में पूर्ण हर्षोल्लास से माननीय विधायक श्री ओ पी श्रीवास्तव जी एवं श्री प्रशांत सिंह अटल वरिष्ठ अधिवक्ता उच्च न्यायालय के द्वारा ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम में आए हुए समस्त अतिथि महानुभावों का परिचय विद्यालय के प्रबंधक श्री मदन मोहन गुप्त जी ने कराया। कार्यक्रम में भैया बहनों के द्वारा अनेक मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस कार्यक्रम में अनेक गणमान्य नागरिकों एसंघ के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं एवं अभिभावकों की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी आगंतुकों का आभार प्रदर्शन विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गोपाल राम मिश्र जी ने व्यक्त किया।

हमारे विविध कार्यक्रम

UPHIN-11403

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026
प्रेषण डाकघर-रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि- 5,6,7,8

विविध गतिविधियाँ

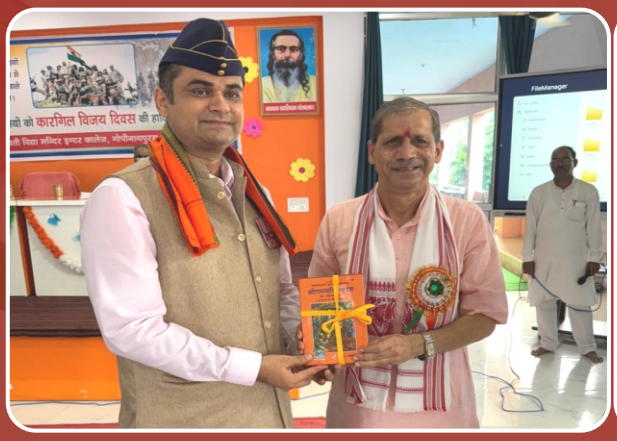

मुद्रक: प्रिन्टको प्रिन्टर्स-22, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ- 226020, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।

प्रकाशन तिथि : 01:09:2024